सू.सा गुभी ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ किनु माधौं राधा तन सजनी सब विपरी
२५७ ति भई ॥ गई छिपाय छिपाकर की छवि रही कलंक मई ॥ १ ॥ लो
चन हूं ने सरद सारसे मृग छवि निचोय लई ॥ आंचल गो चैन्यों
सोनो न्यों तनु धात हुई ॥ २ ॥ कदली दल सी पीठि मनो हर सो
जनु उलटि गई ॥ संपति सब हरी हरी सूर प्रभु विपदा दई दई
॥ ३ ॥ राग मलार ॥ सखी री दिखरावहु बहरे स ॥ कहां कहौं इहि ब्र
ज बसि हरि बिन रह्यौं सुख को लेस ॥ १ ॥ मुख मीठी अक्रूर ही ली
हूं मसि सुरि भौं ले जांन ॥ जासु न बधि क बिधे मो मृग ज्यों हत
तु बिसासी प्रांन ॥ २ ॥ मैं मधु ज्यौं राखे सचि मोहन तें भंगी कीरी
ति ॥ देहु गाछुार अवधि लें गव नैं सुनि पति जहां अनीति ॥ ३ ॥ मो
हन बिन हम बस तज घो ष मैं भई तीसरी सांझ ॥ सूरदास गए प्रा
ण पति त अब कहां रहत घट मांझ ॥ ४ ॥ राग गौड मलार ॥ ब्रज त
जि गए माधौं कालि ॥ स्याम सुंदर कमल लोचन निधि कैयौ बिसा
रि आलि ॥ १ ॥ बैठि निशि बासर बिसूरति बिकल बहु दिसि भा
लि ॥ कहां करैं कछू न कर्म अपनौं नाहिं दीजें गालि ॥ २ ॥ तज्यौं भो
जन भवन भूषन आति बिरह बेहालि ॥ हित नहीं को हि का
हि पकऊ करि रही जिय लालि ॥ ३ ॥ घोष ही घोषे हुगारे क्रूर ग
यौ रथ चालि ॥ सूर प्रभु के हे जसोदा कहां पायौं पालि ॥ ४ ॥ रा
ग मलार ॥ इहि बिधि पावस सदा हूं मारें ॥ पूरन पवन स्वास उर ऊर
ध आनि जुरत ना कठोरे ॥ १ ॥ बांदर स्याम खेत नैंन नि में बरखि
अंसु जल धारि ॥ अरुण प्रकास पलक दुति दामिनि गरजना
म पिय प्यारे ॥ २ ॥ चातक दादुर मोर प्रगट ब्रज बानत निरंतर आ
रे ॥ ए उनौ न बनै अरबे जब स्याम रहे हि तउ रे ॥ ३ ॥ सूरक हंक
हियें को जांनें प्याहि न केयो हारे ॥ तुम हि सेउ बहिकें पछितां
नी कठिन बिरह के नारे ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ घट मधुबन पर बर
ति आइ ॥ हरि घनस्याम बिना सब बि रहिनि बेलि आई कुम्हि
लाइ ॥ १ ॥ उग्र तेज सम भान तपन सखि ब्याकुल मन अकुला
इ ॥ काहि कहां उपचार सखी री नेकु न तपति बुझाइ ॥ २ ॥ जब
जब सुरति होति उर अंतर तब हिउ ठत तन नाइ ॥ सुमिरि सु
मिरि गुन स्याम राम के रही सूर मुरझाइ ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ जीव
हि ज्यौं कमें ता दैंह न ॥ जिन सो प्रीति करी सुनि सजनी तिनहि
बिछुरि दुख दीनं ॥ १ ॥ ज्यों सर कूल मीन तल फत हैं हुलस होत

Shrimad Gokulnathji Maharaj

जलजीन ॥ स्यांमबाहि निषिल हरि बिहरत्यौं हमजुमरानि लें
लीन ॥२॥ ससिबंदन घन बास डारि सुगंध प्रबिकतपतमिलि
तीन ॥ सूरस्यांम बिनु घोष मौन ब्रत बिनजंत्री ज्यों बीन ॥३॥ रा
ग२ ॥ ब्रजपर मंडल करत हैं कांम ॥ कहियों पथिक कांन्हसो
राषहि आंनि आंपनों धांम ॥१॥ मनुखुर धूरि धूंधि चतुरंगिनि
घेरि पर्यो है गाम ॥ अवधि बचन गढ राहन चाहत निरारिपा
छि लेंराउ ॥२॥ जलद बमान आपरफू भरि तडित पलीतारत
गरजनि मनहु छुटनि गोली की पहरख में गुलेलेत ॥३॥ ले
दुलेदु धुनि धारत डरत बंदी पिक चातक मोर ॥ ढोवा करत सु
भट दादुर सदल रलकि रलकि बहु ओर ॥४॥ कुसुम करंबक
सुमसर अलिमुख छांडत सर धनु खैंचि ॥ पवन वकील आए
करमागन रही तु मधि मोंबैचि ॥५॥ तापस मधुप जनोसरेषिग
यों दूस्यों धीरजपानि ॥ जो निय लाज होंहित तें रब हु सरअप
नोंजांनि ॥६॥ राग बरवा ॥ सुनियत कुबिजा कांनि बानी ॥ पोतअ
टपटी चालि गई हरि नव सत तन कांन न की मानी ॥१॥ भेटी आ
इ नगर दरबारें चंदन रे तठ गे कबी बाजी ॥ पायो सुरत सुहाग
सबनि कौं हरि प्राचीन प्रीति उपराजी ॥२॥ भली भई पूरन फलपा
यो देखि सुरूप कांम रति लाजी ॥ जनम कोटि न पाकि यों सूरप्र
भु परम सुहाग निनिधि बैठ गाजी ॥३॥ राग सारंग ॥ कहां रहि नाए
सेहो जैहैं ॥ सुनि सखि इन गोपाल इत आगन ग्वालन संग आ
फिरि ऐहैं ॥१॥ कबहुक जाय पुलिन जमुना की बहु तन विरह बि
घि खेलत ॥ सुनि हेत आवत सुरभिनि संग पुहपा लियें कर
झेलत ॥२॥ म सुसक कांनि आनि राख्यौ बल न कह्यौ हो आवन
सूरसु दिनक बहू होइ हैं मुरली मधुर सुनावन ॥३॥ राग म
लार ॥ सखी री हरि आवे के हि हेत ॥ बे राज जन मग्वालि बुलावति
इहैं परे खोलेन ॥१॥ अब भसि रछत्र बक नकमनि राजे मोर चंद
नहि भावत ॥ सुनि ब्रजराज पौरि बैठत जदुकल बिरद बु
लावत ॥२॥ द्वारपाल प्रति पौरि बिराजत दासी सहस अपा
र ॥ गोकुल जाय सहे दूषकौ लौं सूर सहेस कुमार ॥३॥ राग कां
न्हरों ॥ कहां कहों इन नैं ननि की बात ॥ एकासुगल उडो इवा
हत पल पिंजरा न समात ॥१॥ एक टक मग जोवत निसि बा
सर पल पल बीतत जांम ॥ ब्रजवनिता आतिदुखित जांमि ह

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू०सा० रिकवआवहिंगेधांम॥४॥असुवनमिपिलभईहैंछाती।सव
२५८ व्रजवाढौवारि॥जोगसंदेसभोरमेंडारतकौकहिपांवहिपा
रि॥४॥हरिकोंविरहसवलतेंअवलाअतिव्याकुलआधी
न॥सूरदासगिरधरविनगोकुलजैसेंजलविनुमीन॥४॥रा
म॥ला॥बहुरिपपीहावोल्योरीमाई॥नींदगईचिंताचितवाढी
सुरतिस्यामकीआई॥१॥सांवनमासमेघकीवरषाहोंउठिआं
गनआई॥चहूंदिसिगगनदामिनीकौंधतितिहिंजियअधि
कडराई॥२॥काहूंरागमलारअलाप्योंमुरलीमधुरवजाई॥सू
रदासविरहिनीव्याकुलधरनिपरीमुरझाई॥३॥रा॥नट॥दे
खोमाईलोगचतुरमधुवनके॥वातनहीगोपालविमोहे
गुणजानतमोहनके॥१॥जवहरिगवनकियोंमथुराकोंथा
क्योंमोहसवनिके॥सूरदासप्रभुविनयोंलागतमेघनयों
ज्योंपवनके॥२॥रा॥सारंग॥सखीरी…तोकोऊढिगना
हीविलपतिविकलविहीन॥मेंना…मिलेमाधौ
रीउठिलागीअकुलान॥१॥नी…सूरराय गिरीधरराखी
प्रणामपंचसंधान॥अव…रमेंरमेरीमाईसपनछूटेछ
लवान॥२॥सूरस…जलछिमनज्योंयासरकोकव
आगारनप्रान॥न्यारे…जीवनमूरिमुकंदहितवाहिरहेंए
न॥३॥रा॥धनाश्री॥कहांकोईजानेंपीरपराई॥ज्योंजलमांहमी
नकोंमार…गुनपहिचान्योंजाई॥१॥व्रजकेलोगरोगुनहि
समुझतवेरहिरहेतवहांई॥सोजानेंजाकेतनलागीकेजिनि
दईलगाई॥२॥जनअतिछीनखलनवातियाकोसुधिवुधि
सवविसराई॥सूरस्यामप्रभुआंनिमिलावहुजातेसवदुख
जाई॥३॥रा॥विहागरो॥जपतीहोंतेरेगुणकीमाला॥तुमरे
कारनजोगिनिह्वैगीवांधि…मृगछाला॥१॥एकवनढूं
ढिसकलव्रजढूंढ्योंकहूंनपाएनंदलाला॥सूरदासप्रभु
तुम्हरेमिलनकोंहौंविरहिनिवे…॥२॥रा॥विहागरो॥मोह
नमदनगोपालमाधौमथुराजायदरसदीनो॥चलतीवेर
अवधिआसरेंअजहूंनआएकुविजासंगसुखकीनों॥१॥
हमेंछांडिदासीजेसेंजलतेंमीनकाढोहमतलफतितनछी
नों॥सूरश्यामअववेगिमिलहुविनिसवतुमरेआधीनों
२॥रा॥विलावल॥हरिसुतपावकप्रगटभयो॥मारुतसुतवं

Shrimad Gokulnathji Maharaj

धुपितुप्रोहित ताप्रतिपालहिं छांडि गयो ॥२॥ प्रीतिपतिताकों
पुनिवाहनताबाहनवनसुतउनयो ॥ मीनसुतासुततनालक
हूतहेंतापरकासनसकलछयो ॥२॥ ससिसंगसरोजकाली
कोंताते मेरे मनमांझछयो ॥ सैलसुताकोरूपनआवतता
दिनकोंत्रियनेंमूलयो ॥३॥ सारंगसुतावाकेसुतकोंहितु
तासुतसोंसुखनापहूयो ॥ सूरदासरबिरथरविकेवसआज
हूमोहनदरसदयो ॥४॥ रा॰ नट ॥ मिलबहुपारथमित्रहू
आनि जलजसुतकेसुतकीरुचिलेंभईरसकीहांनि ॥१॥
उदधिसुतासुतअवलिउरपरइंदुआयुधजांनि ॥ गिरिसुता
पतितिलकाकरकसहनतसांयकतांनि ॥२॥ पिनाकीसुत
तासुतवाहनभछकोंभछवखांनि ॥ साखामृगरिपुबसत
मलयजुहूनसुतासनजांनि ॥३॥ धर्मसुतअरिकेसुभायरि
तजैमिसिरथरिपांनि ॥ सूरदासविचित्रविधिहै चूकमनम
नमांनि ॥४॥ रा॰ सारंग ॥ जलसुतप्रीतमसुतरिपुबंधकआ
युधआननविलसुभए ॥ सारंगसुतापतिबसतजुमांझे
कोटिप्रकासरिसायगए ॥१॥ मकरनसुतपतिरिपुपुरवासी
पितुवाहनभोजननसुहाए ॥ सुतसुतबाहनभछसनेहीमो
नहुअनलदेहदहेंलाए ॥२॥ उदधिसुतपतिवाहनकोंवाहन
ताकोंवैसेंहांसमुझाए ॥ सूरदासप्रभुधर्मपुत्ररिपुताअव
ताराहिं सलिलबहाए ॥३॥ रा॰ सारंग ॥ सुनिरेपछीसमुझिसि
खमेरी ॥ जहांसतजहूनापअगाजमनिवारकेंतहांआउ
कफेरी ॥१॥ तुमकोकिलाकुलीनकुसलमतिजानतिवि
पाविरहिनिकेरी ॥ तोसीऔरनहींउपकारिनिपहवसुधा
मेंविधिकरिहैरी ॥२॥ उपवनवैठिबोलिबरबांनीबचनवि
साहिमोहिकोरिवेरी ॥ प्रानिनिकेपलटेंनपाइयेसेंनिविका
तिसुजसकीढेरी ॥३॥ कहिपोप्रागटपुकारिद्वारकेंअंकला
आनिअनंगारेलघेरी ॥ बहोलेंआउसूरकेप्रभुकोंगाउंगी
कालिकीरतितेरी ॥४॥ रा॰ आसावरी ॥ बीचवराऊंपानीलीजों
जबतुमजाहुरेमधुराबाति हमरी रसालगोपालहिदीजों
॥१॥ रंगभूमिरमणीयमधुपुरीराजधानहरिजवकीसुधिकीजों
हारसमुद्रछांडिकिनिआवतयहनिर्मलजमुनाजलपीजों
॥२॥ यागोकुलकीसकलग्वालिनीदेतिअसीसकान्हचिरजीं

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू०सा० सौ ॥ सूरदास प्रभु हमारे ह्वां तें नंदनंदन के पाय परी जो ॥ ४ ॥ राग भे
२५८ रों ॥ देखें विनु जान लागे बहुत दिना ॥ कैसें करि प्रान राखों
स्याम विना ॥ १ ॥ तनत करत सखि छिन ही छिना ॥ सिंघ कैसें
जीवत बरतन तना ॥ २ ॥ जो नहि मानत वचन रिना ॥ तव कहूं
कही सूर स्याम विना ॥ ३ ॥ ८१ ॥ राग नट ॥ बेरैनियत मधुवन के
रूखरी ॥ नामें स्याम हमारे प्रीतम जिननि हरी मेरी नींद भूख
री ॥ १ ॥ उन बिनु मो पें रह्यौ न परत हें बिन देखें नेंननि कों दुख
री ॥ सूरदास प्रभु मोहन नागर को बिरह को लूभयों तन रू
खरी ॥ ४ ॥ ८२ ॥ कान्हरौ ॥ लाल उनि सुनी हैं मनोहर बंसी ॥ नाहिन मन
संभार जुवती वरत बतें मदन भुजंगम डसी ॥ १ ॥ को न्यावें सं
गीत सरोवर मगन भई गति हंसी ॥ आपुन ही चालि पेंड उद्धरि
यें मोलि भोंह दृष्ट फंसी ॥ २ ॥ मो न हुतन रूप … माल स्याम तन
लता माल नीर ग्रेसी ॥ सूरदास प्रभु मोहन नागर लें भुज बी
च प्रसंसी ॥ ३ ॥ पुन भ्रमर गीत ॥ राग … री ॥ हरि रथ पर तन भ
ह्वां कि अनूप दिखावें ॥ जिहि विध … तहीं तें आवें
॥ १ ॥ बाल ॥ उत हीं तें आवें सखि निबुलावें देखों मन नहि विचा
री ॥ मनि मुकट कि … नपीत बसन कें जगो बिरह की अ
नुहारी ॥ ऊधो जि … नें मुख कुल्हि लाने ह्ल … संदेस पन
ए ॥ ओई आभूषन लागे देषन जब लगनि परे आए ॥ २ ॥
बाल ॥ चलो बिलो ऊधो री सुनियें कछु बातें ॥ कहहु कहहु
ध्यों हरि कौ कुसलातें ॥ २ ॥ बाल ॥ कहियें कुसलातें सांची बातें
आवन कह्यो कि नाही ॥ केंगर बाने राज समाने अब हम बि
सरि सुहाही ॥ … कंपहि सुंदरि जिंपहि बार बार अकु
लाई अबजिय कपट कछु जिनि राखहु बूझों सो हरि बाई
कहहु कहहु ऊधो तुम कौं ब्रज आए ॥ तब ह्रसि वचन करे
हमें … पठाए ॥ ३ ॥ बाल ॥ … जो ब्रज आए क
हत मनोहर बांनी ॥ तुम सुनहु हमरे सों तजहु अरे सो तुम हों
सकल सयांनी ॥ गोप सखा जिनि निचित राखों अविगत हें
अविनासी ॥ मोहन माया पीरन दाया सब घंट सरानिवा
सी ॥ ऊधो जिनि वह्रों हरि की प्रभुताई ॥ सुनि तिय अनकच
टि सर ह्यो न जाई ॥ ४ ॥ बाल ॥ सिर ह्यो न जाई अनख जिय
बाढें यह हरि लो प्रभुताई ॥ दासी कुबिजा कुटिल की संगति

Shrimad Gokulnathji Maharaj

कोंनवरेंमनपांई॥ तुमपुनिभलेकहत आवतहो हमकोंस
वेंसयाने॥ जोब छुवातें दृषियत आखिनुमेंउनकेमनमांनें
ऊधोंहरिकेब्रजहमकहांवखांनें॥ गोविंदकीबातेंसबकोउ
जानें॥ ५ ॥ वाल॥ सबकोउजानेंकौंमनमानें अवनकहुवनि
आवें॥ परवसभएकहतहें सोई कछुकुबिजाजोकहेंवें
वाकोंन्याउदोषसवहमरोंकर्मरेखकोंजानें॥ हमगोपसद
खीजोराखेंगाहक विधानागतिआनें ऊधोतुमकमला
नेंनसोंकहियोंजाइ॥ एकवारकेंसेंहूब्रजरेहुरिखाइ॥ ६ ॥ वा
ल॥ कहियहुजायस्यांमसुंदरसों तबऊधोसमुझावें॥ शंक
रब्रह्मसनकादिकअरुसुरपतिकोंऊअंतनपावें॥ जोपेंप्रीतिप्रगा
ढमिलिवेकीहदेंध्यांनअंतिधरियें॥ सूरदासमिलनबहु
तसुखविरहसोकबहुंनटरियें॥ ७॥ रा॥ वि॥ ला॥ वल॥ स्यामसब
देखनकोंजवधाए॥ एककहिएकपरस्परबूझतजनुमोहनद
लहआए॥ ८॥ सोईध्वजापताकासोईसोईरथसोईनारि वससि
धाए॥ काननिकुंडलअरुपीतवसनसोईकेवेसेईसाजवनाए
२॥ नायनिकटपहिचान्योंऊधोंतोंजलजजलछाए॥ सूर
स्यामसिटीपरस्पासानतनविरहजनाए॥ ३॥ रा॥ वि॥ ला॥ वल
कौंआलिगावनकियोंमधुपुरातेंकहेंधोंकहांविचार॥ स
भासुमतिगुणज्ञानध्यानमेंनहिब्रजभजनप्रकार॥ १॥ ज्यों
सूक्षमपटघोषनारिकोंतुमासिरजन्रकुलभार॥ कहांवो
लतचितप्राणलियविनमाधुवादृष्टिमार॥ २॥ मुनिमु
निमुखमुखठनिरूतनिपठवनकोंविस्तार॥ हमांजोगा
अरुअगमअपोचरसेंलधरनआचार॥ ३॥ हमतोंनंदनं
दनकेरसमेंपगीधरेंनहिछाप॥ सूरदासप्रभुआनिमिला
वहुनागरनंदकुवार॥ ४॥ रा॥ वि॥ ला॥ वल॥ कृपाकरिहरिप
ठयोंब्रजपेंतुमसोंदरसदिखावन॥ प्रियमर्मरेसकहेंतोक
हिलेउपाधेंजैसदंद्वावन॥ १॥ तुमहूमकबहूंनिमेषबिग
मनहितिगमकह्योमनभावन॥ अरुएकवीचिनिदरस
नदीनोंभूतनतलमुनिपावन॥ भए अषाढमधुपुरीऊपर
श्रीगोकुलपरसावन॥ भादौंचौथिचंद्रमाकीगतिऊधोस
खासुहावन॥ ३॥ हमतोंकहिनिवेहिस्यामासूपुरुषवागवस
कहावन॥ इतनोंसफलकरहुनिजरसनाजाहिरत्नगुणगा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा
२६

वन॥४॥कुसुमकपाठकुरानीमंडनगुरुवचनपनविसरावन
कहूंलौंकहियेंचकितभयोअलिसूरचरणधामिधावन॥५
रा॥सा॥गा॥यहउपदेसकह्यौहेंमाधौ॥करिविचारनियसाधन
साधौ॥१॥इलापिंगलासुखमननारी॥सून्यसहजमेंवसहिमु
रारी॥२॥ब्रह्मभावकरिसबगुणहिदेखौ॥अलखविनाकछुऔ
रनदेखौ॥३॥पूंचीनारएकमनलाई॥नेनमूंदिअंतरगतध्या
ई॥४॥हृदेंकमलमहजोतिप्रकासी॥सोइअंतरजामीअवि
नासी॥५॥यहउपायविरहजलतरिहौ॥जोगपंथक्रमक्रमअ
नुसरिहौं॥६॥यहसंदेसकह्यौगोपाल॥सुनतहिविमुखभई
ब्रजबाल॥७॥रेमधुकररसलंपटवाई॥ऐसेवचननकहेक
न्हाई॥८॥श्रीवृंदावनभवनविराजें॥नटवरभेखसदाहरिसा
जें॥९॥रासविलासभलेमानेमन॥विवगोपीवतकान्हस्याम
घन॥१०॥अलिप्राएहेंजोगासिखावन॥केसेंकेप्रीतिलगोसि
रनावन॥११॥भमरगीतजोरिनहितगावें॥परमानंदपरम
पदपावें॥१२॥सूरजोगकीकथाजनाई॥प्रेमभक्तिगोपीजन
पाई॥१३॥रा॥सा॥गा॥परीपुकारहारगहगहप्रीतिइहसांची
भईजोगीआये॥पवनसंथाकनभक्तछिडावनरवनरस
लुकृपालपठाये॥सासप्रबाधिपरमावधिजीवनतेउ
सिथिलकरिविचारुतुलायो॥कनकवेलिकामिनिब्रजबा
लहिजोगअगिनिदीवेदिनधायो॥१॥भूसरहरनप्रसुरमा
रनाहितजीआननकान्हमधुपुरीछायो॥यादौमेंब्रजजनकों
नाहिनकाहूकोंउलयोपरमाविनरायो॥२॥संबलस्यामधा
मदेखिपठयोनपअधिकारसारजपायो॥सरप्रीतिनविसा
रीसांवरेभलीचतुरताजगतसुनायो॥३॥रा॥सा॥रि॥को
ऊमधुवनतेंइहेंआयो॥सखीसुमनसबसुनोसुचितनदें
हितकीस्यामपठायो॥१॥मनमोहनविछुरेयाब्रजमेंइ
तेदिनोसदुखपायो॥सोईयहकपालनयनचारुएककिहि
रहेंमांऊबतायो॥२॥अतिकृपालव्याकुलअबलनिकोंया
पक्रअगाहगहायो॥भजहुसूरसुनिहोनपरमसुखनेति
जुनिरामनगायो॥३॥रा॥सा॥रंग॥मधुकरभलीसुमतिमति
खोई॥हांसीहोनलगीयाब्रजमेंजोगहुराखहुगोई॥१॥आ
तमरामलखावतडोलतघटघटव्यापकजोई॥चांपेकां

रषि करत निर्गुन कों ग्राहक नहि कोई ॥ २ ॥ प्रेम कथा सोई पै जो
नें जा पै बीती हो ई ॥ तूं नीरस एती कहा जानें बूझि देषि धौं वोई ॥ ३
बडो दूत तूं बडे ठाकुर को कहिये बुद्धि बडो ई ॥ सूरदास पूरी षषट प
द कहत फिरत है सोई ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ जोग जुगति जग ग्रपि हम
लीनो लीला का कों देह्रो ॥ उलटि जाहु मथुरा मधुकर तुम बू
झि वेगि ब्रजराज हो ॥ १ ॥ रास समें कालिंदी के तट तब तुम करन
न मानें ॥ इह कों सुनें कुपथ की बानि या प्रभू पराए जानें ॥ २ ॥ नग
र बसत गुण ग्यान बढत है पै मूल हिं बिसरयो ग्यान ॥ चाषिवा
हु बडभ ए मधुपुरी षेरत हुतासन कों न ॥ ३ ॥ आपुन फेर कियो दृषि
यत हैं तुम भले हम भूलति ॥ सूर स्याम बल्लव बैनी बिनु द
रस सलिल उन मूलनि ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ जैसो कियो तिहारे प्रभु
आलि तैसो भयो नन काल ॥ ग्रंथित सुमन धरत निहि ग्रीवा
जहां धरे बनमाल ॥ १ ॥ टेरि रत श्रीदामा तुम चढि सरस बच
न गोपाल ॥ तहां श्रवत नत अक्रूर प्रमुख सब कहत कंस कु
ल काल ॥ २ ॥ कोमल स्निग्ध कुटिल अलकावलि मृगमद भू
षित भाल ॥ तहां श्रवल गत धूम्र वधू को पूजा भस्म कराल ॥ ३
जहां मणि कंकर सुधा सरस जल सत दल मधुकर जाल ॥
एसो सरू त्यागे मुनि सूरज कर इत न्याय मराल ॥ ४ ॥ राग सा
रंग ॥ स्याम सम को स्वामी इहां अलि तासों कहां सभा सा ॥ मोहन ना
गर नायक की मनि तनी प्रबर कहां आसा ॥ १ ॥ कर्म मूल ठानो
उर सुनियत रस तासे धि प्रकासा ॥ भई विरह ब्रज प्रेम नेम की
हूं पथ कोकिय विनासा ॥ २ ॥ इत नीभ एनें न नहि समुझत प्रयाम
परे इहि पासा ॥ देषत छांडत भजहु सूरदास इह बीच बसी ठह भासा
३ ॥ राग सारंग ॥ हरि बिछुरन की सूलन जाइ ॥ बलि बलि जाउ सुष
रविंद पर मूरति मनमें रही समाइ ॥ १ ॥ एक बेर मघवन माहि
यां गहि अंचर मेरी लाज छुडाय ॥ ते दिन ऊधो नाहिन बिसर
त अंबर रहे जमुनातट आय ॥ २ ॥ कबहूं कह सिजु देत आलिं
गन कबहु करद रेउ ठत है पाइ ॥ सूरदास स्वामी के गुणगाए
सुमिरि गोपी पछिताइ ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ कोइल बोली बनबन
फूले मधुप गुंजारन लागे ॥ मानो भयो भोर रोर वंदिनि तें म
दन महीपति जागे ॥ १ ॥ तिनहूं नैन बपल्लव प्रगटे जे हुते दवा
द्रुम दागे ॥ मानों रति पति मनरी झि जाचक निवरन वं रंनदए

Shrimad Gokulnathji Maharaj

बागे॥४॥नयौंमासमधुनईवरनिमानवनवविधिरसपागे॥
नयौंनेहनईबागपिकुंजिजाकंतआवेंसूरअनुरागे॥३॥रागसा
रंग॥जिहितनगोकुलनाथभज्यौ॥ऊधौंहरिबिछुरततिहिनाँ
गरितेतननवहितज्यौ॥१॥जबसंदनचढिगवनकरतफिरि
हुमिचितयौगोपाल॥नवनेंपरमकठनप्राणअबसंगहिंन
लेउनाल॥२॥अबयहसृष्टिओरैंब्रजकीजाननकोउएका
जांन॥ततौंसंदेसआपुनेंपियकोंकैयोंवनकरतीकांन॥३॥अ
जहूंसामगईसामनतेंउपजततनहिंपरतीति॥सूरदासजननव
रनेंकहोंलोंकठिनप्रेमकीरीति॥४॥रागसारंग॥गोपालहिंबा
लकहीतेंटेव॥जांनहिंनहींकांनपेंसीखचोरीकेछलछेव
॥१॥मांखनदूधदह्यौंजबखांतेसहिरहतीकपिकांनि॥अबकैयों
सहीपरतिसुनिसजनीमनिमांनिककीहांनि॥२॥कहियोंम
धुपसंदेसस्यामसोंराजनीतिसमुझाइ॥अबहूंभजनतनाहि
वहलोभीजुगतिनहिंनसुराइ॥३॥सबविवेकरसबसयात्र
जकोंलेंजुरहेमुसिकाइ॥सूरदासप्रभुकेगुणओगुनकहि
येंकासोंजाय॥४॥रागसारंग॥बिसरतक्यौंगिरिधरकीबा
तें॥अवधिआसनेंराखौंमधुपमनतजिनगयोघरतातें॥१॥
पतिकेबिरहछीनभईदेहीदुखपरोसंघातें॥तनरिपुकाम
चित्तरिपुलीलाउमनरुचनननहिंयातें॥२॥श्रवणसुन्योंचाहत
हरिकेगुणजोइकथारसरातें॥लोचनरूपध्यांनरहैंनिसदि
नकहोंधौंकहिकांतें॥३॥मौनरूपप्राणतजेसुतकेंहितत्यौन
गणजाने॥सूरसुमतितोहीजियउपजेंहरिआवेंमथुराते
॥४॥रागसारंग॥जोपेंहूमोहिंकृष्णजूभांवहिं॥तोसुनिमधुपज
सोदानंदनअबहीगोकुलआवहि॥१॥जिनिनेंननिमोहनमु
खहेर्योंनिसदिनरूपबिचार्यौ॥तेनेंनावरहतमनेंघरप्रीति
नहेंरोंबिसार्यौ॥२॥जिहितनआसनसयनसंगसुखहरिसा
मीपरतिमांनी॥तिहितनविरहनछूटतसुमिरिगुणरंचकवि
षांनजांनी॥३॥सममसौरभसमित्रिविधअनिलसुनबैसि
यप्रकृतिनिवाहत॥बिसमविरहिनीजांनिछठएमनुतउतन
नाहिनसाहत॥४॥अतिबलउग्रअनंगमहाभटनाहिंसबेंज
गुजाननत॥सोईबलहीनदीनमरकरगहिकोपिधनुषनहिताँ
नत॥५॥कनविलासब्रजबासरामरसदेखिदेखिदुखपावत

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सूरदास वह्हुरों वियोग विधि कुकवि निलज कै गावन ॥४॥ राग सा
रंग ॥ सब खोट मधुवन के लोग ॥ जिनि के संग स्याम सुंदर सम
सीखे हैं अपयोग ॥१॥ आए हैं व्रज के हित कारन लें वान निकों जो
ग ॥ आंमन ध्यांन नैन मूंदें सखि के सें जातु वियोग ॥२॥ इन हूं भ
लौं जांनि उपदेस्यौ दासी सें संजोग ॥ सूर सु वें दकुहालें कीजें क
हूं न जानें रोग ॥३॥ राग सारंग ॥ जद्यपि मैं वहु जतन करे ॥ तद्यपि म
धुप हरि जांनि वें का हूंन प्राण हरे ॥१॥ सो प्रभ जुन सुमन स मे वि
न लें संत न मैं जधरे ॥ सन सुख हू तन जसर दसमाछि सजनी तौ उन
अंग भरे ॥२॥ चातक मोर कोकिला मधुकर सुनि सुर श्रवण भरे
सार रहें निरखनि रजिपनिकौ नें कुनपल कपरे ॥३॥ निसस्नि
रटनि निंदनें दिन यों उरजें छिन न टरे ॥ अनि आतुर चतुरंग चमू
चढि अनगान मरसें चरे ॥४॥ जानति नहीं कौं न उर इतनें पालें सबे
डरे ॥ सूरदास सकुचि श्रीपति की सुभट निवल लिसिरे ॥५॥ राग
सारंग ॥ नव वहू सुरति हो गति हैं वान ॥ सुनहु मधुप या वेदन कौ ग
ति मन जानें के गात ॥१॥ रहति निरहे अंतर गति राखी कहत न है भ
हि जात भई रीति ज्यौं उरग छछूंदरि छांडि चें नें न खांन ॥२॥ एहो
हाल सदा या व्रज में वीनाति हैं दिन रात ॥ सूरदास प्रभु कों मिलि
विछुरन सुमिरि सुमिरि पछितात ॥३॥ राग सारंग ॥ जोग ज्ञान की
वानें उधौ तुम ही पें वनि आवें ॥ आनाकें छ कुसुम की माला वक्ता
लई छ कुराई ॥१॥ केतानी जुरु सब जग जांनें जब दासी र तिपाई ॥ क
न कर तन रपाऊं पराठि कें सी खि चले व्रज धाई ॥२॥ तुम तो परम
साधु उपदेश करि वनी कायत वनाई ॥ हम मही न नेनी की संगति
ज्ञान पंथ मह गाई ॥३॥ पाकें मर मन जानत तकछु वे कहि सुंदरी
समुझाई ॥ सूरदास प्रभु सों तुम कहियो वे सभा जु उढाई ॥४॥ राग
धनाश्री ॥ सद्गुरु चरन भजन विनु विद्या कहों कैसें कोपावें उ
पदेस कहा दृग हित हैं कौं हमरे मन आवें ॥१॥ जो हित कियें तो
औधि कक रहि है कनि आएं लें ग्राम सिखावें ॥ जोग वोझ नैं चलि
न सकें तो हम ही कौन चुलावें ॥२॥ जोग ज्ञान मुनि नगर तजें व
हु सघन गहन वन धावें ॥ आसन मौनु नें सुमन संजम विपिन
मध्य वनि आवें ॥३॥ अपुन कहूं करें कछु औरें हम सव हिनउ
हकावें ॥ सूरदास ऊधौ सोई स्यामा प्रति संके न जन नावें ॥४॥ राग ध
नाश्री ॥ माधो सों नवनें सुख मोरें ॥ जिन्हें नैन निसा सिस्या मखिलो

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा
२६२

कौनें बौ। आतत रनिसों जोरें ॥ २ ॥ मुनिमन रमन राजोगाल कम छ
नमंद रुआरसहन बौ। औरें ॥ नरणी छरे कुमुद के बंधन कुंजर
कौं नरहत बिनु तोरें ॥ ३ ॥ नीलांबर घन स्यांम नीलमणि पैयत
कौं व भ्रमर के भोरें ॥ सरभंगा कमलनि के बिरही चंपक मनला
गत नहिं थोरें ॥ ४ ॥ रागनें ते श्री ॥ अब इहि औरें भए माई इन नैनहीं दू
षि ॥ मधुकर हम अपसरे सो पठयो चतुर चातुरी चूषि ॥ १ ॥ रूपरासि
सब गुनन की परमिति स्याम सजीवन मूरि ॥ तासों कहत मननि हि
मन देखौं सब ठौं हैं भरि पूरि ॥ २ ॥ कौ तामैं यह देस सहा मुनि रहु वि
रहत रूक रूरि ॥ ता परछप स्वरन आए हो कोइला हूं तें धूरि ॥ ३ ॥
रागनें ते श्री ॥ औ रस कल अंगनि नि ऊधौ आंखियां खरी दुखारी
अति छिपि रानि सिरानि न कबहूं अनेक जतन करि हारी ॥ १ ॥
एक टक रहति निमेष न मिलवति बिपा बिकल भई भारी
भरिआई बिरह बाष्प बिनु दरसन चितवति रहति उघारी ॥ २ ॥ रे
अलि गुरु ज्ञान सिला कहि कैसो सहि सकति तुम्हारी ॥ सरसुत्र
जन आनि रूप रस आरति हर तु अपी ॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ तुम
रे संदेस कहां मसि बूटी ॥ भूलत आस सबनी रहाई अब हरि मि
बिरह लयो तनु लूटी ॥ १ ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत अब विधि
ई सब झूठी ॥ पाछें आय कहा तुम करिहौ जब तन तजे हैं छूटी
गोपी सरे सो दूतिनि पठवति प्रथम प्रीति कौ टूटी ॥ २ ॥ सूरदास प्र
भु यों जानत हैं वैरी करहिंगे कूटी ॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ सखी री
जो नियत बुधि यह अनुमान ॥ ये बिय तन नहीं जतन जीवे कों इतें बि
रह इत ज्ञान ॥ १ ॥ इतें चंद्र चंदन समीर सखि लागति अगिनि नि
दान ॥ उत निर्गुण अवलंबन हरि कों कठिन विरोधिनि प्रान
॥ २ ॥ इत भूषन भय करत अंग के सवनि सिंगार विहान ॥ इत म
नाम समाधि गुण ऊधौ जोग ध्यान के जांन ॥ ३ ॥ सूर सहज राज नृपति
बड़े देख दुख कौं उभय समांन ॥ इहि ओसर को राखै सजन कम
लनें ना बिनु प्रांन ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ आपु दैखि पर देखि रे मधु
कर मो औरें सिख देहु ॥ बीतेंगी तब जानेंगे ओरे रावरे कठिन हैं
नेहु ॥ १ ॥ मनजु तिहारो हरि चरणनि तर तनु लैंगो कुल आयो
कमलनयन को संग विछुरि कें कहि कौंनें सचु पायो ॥ २ ॥ गो
कुल रहें जाहु जिनि मथुरा झूठों माया मोहु ॥ गोपी कहति सुरू
धो सौं हम गहीं सु किनि हौ हु ॥ ३ ॥ राग सेषार ॥ नीर कांई कोंन हू क

Shrimad Gokulnathji Maharaj

हौं अलिके मैं छूटत ॥ कहां करौं ब्रजनाथ चरित बहु मन अंतर
गति लूटत ॥२॥ बहु चितवनि बहु चालि मनोहर बहु मुसिका
नि मंद धुनि गावन ॥ नटवर भेष धरें नंदनंदन बहु भाव निव
नतें ब्रज आवन ॥३॥ चरणकमल की सपथि करति हौं यह सं
देस मोहि विष लागत ॥ सूरदास प्रभु निमिष न बिसरत मोह
न मूरति सोवत जागत ॥४॥ रा॰ बि॰ ला॰ वल ॥ सो को न जो नाहिन
सुख पायौ बलि गोपालन के राज ॥ ऊधौ आजु संपद उनकी है
स बहिन के काज ॥१॥ धनुष तोरि गज मल्ल हनन करि निडर
कियौ जदुवंस ॥ मुनि अमरनि आनंद बढायौ करष्यौ कंस गहि
केस ॥२॥ कुब्जा रूप दियौ छिन कों सुत माली कों मन काम उग्र
सेनि वसुदेव निगड तें आने अपने धाम ॥३॥ दीनप्रभु दीन दया
दयालु दिन दिन हम कों यह आस ॥ सूर स्याम सौं कहु है रहिहै
हि दुलने नैननि की प्यास ॥४॥ रा॰ मा॰ रू ॥ वेह पिनाते पौ विसरी
आवत राधा पंथ चरण ता रज हि तसों अंग गाधवरी ॥१॥ भांति भांति
कि फूल पत्र कुसमावलि सिज्या सुहृ ष्प करी ॥ निमिष वियोग नहि
तत वत न लपत स्पौ जल बिनु मछरी ॥२॥ सुनत स्याम नित पाम
रस रंजित सोवत रंग भरी ॥ आगुन कुसुम विंजन कर लीने
करत मरुत लहरी ॥३॥ गोचारन मिस जात सघन वन मुरली
अधर धरी ॥ नाद प्रनालि प्रवेस घोष मैं रिझवत त्रिय सगरी ॥४॥
प्रकृत पुरुष नाम हि लिख कों सेंग सूर अगार जमरी ॥ ऊधौ सुन
त सुनत मन विरह कें तसु फलित कर मेंदरी ॥५॥ रा॰ मा॰ रू ॥ स
व सुख ले करि स्याम सिधारे ॥ सुफलक सुत कछु मलीन कीनी
वे हि हरि उपचारे ॥१॥ चलत पीतपट कर ष्पिन राखे यह जिय सो
च हमारे ॥ मृखन रिद्धि गड़ निसि बासर सुनहु न ऊधौ प्यारे
॥२॥ महा प्रलय तें कन ब्रज राख्यौ कर धरि सैल उवारे ॥ सूरदास
प्रभु तुमरे दरसन बिनु कैसें रहें ए नारे ॥३॥ रा॰ का॰ रो॰ ॥ कहुं न
कीजें अपने काजें ॥ दिन दै चारि रहहु कल बैस बौ जो हरि मिलहि
जोग के साजें ॥१॥ माथे जटा पहिरि कंथा ला बहु भसम अंग सु
समाजे ॥ सिंगी मुंड माल मृग छाला लोचन मूंदि रहौ बिनु आं
जें ॥२॥ जोग विरह के बीच परम सुख मरियत है यह रस हरुआ
जें ॥ मन मुख कै सब सह है सयानी नाहिन आजु ॥ बारि यतु भा
गें ॥३॥ ऊधौ कही सो सांचो मानौ बरषा बिरह तें पंचमी गाजें

Shrimad Gokulnathji Maharaj

पालेसूरवारहांनीकोजोश्रीसहवनेंभेरिकेवाजें॥३॥ राग कान्हरौ
हरिकाकुरलोमनिसोंमधुकरकाहेकीप्रीति॥ जोपैकीजेंतोई
जलजलधररविकीसीरीति॥१॥ देखहुमीनकमलचातकज्यौं
एसेंहीमरवीतिं॥ तलफतजरनपुकारतकरतकछूनाहिनें
नीति॥२॥ मनहठपरयौकबंधजोधज्यौंहारेहूंमानेंजीति॥ सू
कातनप्रेमसमुद्रसूरवरवाहकीज्योंभीति॥३॥ राग कान्हरौ
भूलनिहींकतमीठीवांतनि॥ एश्रलिहैंउनहीकोंसंगीचंचल
चितसांवरेगातनि॥१॥ वेमुरलीधुनिकरनिगमोरहतइनकीयुं
जसुमनमनपातनि॥ वेउठिश्रांनश्रांनमनरंजितएउडिश्रान
तरंगरसरातनि॥२॥ वेनउतनमानिनिगहवासीएनिसिघोस
रहतजलजातनि॥ षषटपदवेंद्विपदचतुर्भुजइननेंनकछु
भेदनभांतनि॥३॥ सारप्यानिपुनसर्वसमुझोजिनिपतिश्रा
उविरहदुखदांतनि॥ वेमाधोएमधुपसूरसुनिइनदुहुनिमें
कवनघटघांटनि॥४॥ राग गौरी॥ सोसुखनिरखिनिमेषवि
सायें॥ नासिनतेंमानोंभएरिसिसरइनेंननिकेतारें॥१॥ तजि
मीखासिखसुमरसासुकीलाजनननजेंउनायें॥ घूंघटघटकेंडां
रेवनवीपानिअहनिसिअटनउधायें॥२॥ सहजसमाधिरूप
रचिएकरकटरनलोकतेंटपे॥ ताकेवविविघनकापनपति
वंधुपितापचिहारें॥३॥ सरसुमतिसमुरुतिजियजानतिऊधो
वचननतिहारें॥ केसेंकहूएकहेनमांनतलोचनहठीहमारे
॥४॥ राग गौरी॥ उपमाराकननैनगहीं॥ कविजनकहतकहतनि
तश्रायसुधिकरिकाहूनकही॥१॥ कहेंचकोरमुखविधुविनुजी
वतभवरतहांउडिजाति॥ हरिमुखकमलकोसविछुरेंतेंठाले
क्योंठहराति॥२॥ खंजनमनरंजनजनजोपेंकवहुनाहिनसत
रात॥ पक्षपसारिनउडतमंदव्हेंसमरसमीपविकात॥३॥ श्रा
एवधनव्याधकेंऊधोजोमृगक्योनपलाइ॥ देखतभाजिवसे
घनवनमेंजहांकोउसंगनधाइ॥४॥ ब्रजलोचनविनुलोच
नकेसेंप्रतिछिनुश्रतिदुखवाढत॥ सूरदासमीनताकछुएक
जलभरसंगनछांडत॥५॥ राग गौरी॥ प्रेमनरुकतहमारेवूतें
किहिगयंदवांध्योकहिरूधोंपमनालकिधोंकाचेसूतें॥१॥
मनमधुपाहिहजगायोसोवतसुनिसंदेससांमकेंदूतें॥ विर
हसमुद्रसुकायकहांतेंरंचकजोगश्रगिनिकेलूतें॥२॥ परमा

रथ गुरुज्ञान कहूंत हों मुक्ति लें जाउ हमारे हूतें ॥ वांहं न मिल्यौ
सूर के प्रभु कौं कैौ पति आउ तुम्हारे हूतें ॥ ३ ॥ रा ॥ सारठि ॥ हरिह
म सों बिसरि हें सजनी मीन जल की प्रीति ॥ किति कहूरि स्यालछ
धों अवधि गई बितीति ॥ १ ॥ नलपिके नन प्राण रहे ने प्रेम की पर
तीति ॥ नीरनि करन पी रजानी गई बिथा वपुनीति ॥ २ ॥ चलन नहीं
प्रभु कही हुहहों आपर हों रिपुनीति ॥ सूर अब ब्रजनाथ सी बे
सबे उलटी रीति ॥ ४ ॥ रा ॥ सारंग ॥ हम सों उन सों कहां सगाई ॥ हम अ
हीरि अबला ब्रजवासी वे जदुमनि जदुराई ॥ १ ॥ कहां भयौ भले
जदुनंदन अब यह बुद्धि बनाई ॥ सकुचन आवें घोष बसन की
तजि ब्रज गए पराई ॥ २ ॥ ऐसे भये उहां जाहों पति गाय गोप बिसरा
ई ॥ सूरदास यह ब्रज को नातो भूलि गयो बलि भाई ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग
में जानि ऊधो हरि की चतुराई ॥ बारबार तुम कहत अगाध तम पाव
त कौन बडाई ॥ १ ॥ जे तुम कहत अगाह अगोचर सरस तज्यो न
जाई ॥ बाहिर भीतर स्याम बरन ते सुनियत सबै भलाई ॥ कें तुम
कहत आप आपनी कें तुम कहत कहाई ॥ सूरदास प्रभु बिरह
जरति हौं बिनु पावक करें लाई ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ गोपालहिं कैसें कें
हम देति ॥ ऊधो की इनि मीठी बातनि निर्गुण कैसें लेति ॥ १ ॥ अ
र्थ धर्म कामना सुनावति सब सुख मुकति समेति ॥ का की भू
ख गई मन साहू देखहु सोचति चेति ॥ २ ॥ जे व्यापक हि बिचारत
बरन न निगम कहत हें नेति ॥ सूर स्याम तजि को न सकत है
अलि का के गति सोति ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ हरि बिनु दुहि बिधि हें अजर
हियतु ॥ परपरि क सुनियत है ऊधो नातें तुम सों कहियतु ॥ १ ॥
चंदन चंद पवन पावक सम मिलि मिलि हें तन रहियतु ॥ ना
गत जाम जात जुग नु मास सम जतन निहीनि वहे हियतु ॥ २ ॥ बिर
ह सिंधु जदुनाथ स्याम तनु कैसें हू पार न पेइतु ॥ पिपि पिपि अ
वधि आस अवलंबि नु बूडत त्रतु ज्यों गहियतु ॥ ३ ॥ नें मुक आ
सदरास की ऊधो ता लगि हें सब सहियतु ॥ मन क्रम बचन स
पथ हें सूरज और कछु नाहि न हियतु ॥ ४ ॥ रा ॥ धनाश्री ॥ कहां की
ऊ जानें पर पीर ॥ नंदनंदन के बिछुरें सखिरी बहुतें सही सरीर
॥ १ ॥ काहि काहि कपा मधुप समुझावत मन राखत धरि धीर ॥ नें
न मीन कैसें सचु पावत बिनु हरि रस मन नीर ॥ २ ॥ जोग समाधि
कहां हम जानें ब्रज बासिनि अहीर ॥ कैसें हांधों मिलहि सूरप्रभु

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा बहुरि तरंगिनितीर ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ हमतौ इतनेंही सचुपायौ सु
२६५ दरसांमलकमलदललोचन बहुरि वेदरस सरिषायौ ॥ १ ॥ सुनकथ
नु सुमगजकंस मारिकें कह्यौ सबनिकौं भायौ ॥ महाराज नंदहं मा
तुपितु हूं मिलिं नऊन ब्रज बिसरायौ ॥ २ ॥ कहाभयौ जो लोगु का
हू नहें कंस मधुपुरी छायौ ॥ सुनियह दसा विरह की लोगनि
उठि आतुर हह्वे पछितायौ ॥ ३ ॥ गोपीगोप नंदजसोदा मिलि प्रेम
समुद्र बढायौ ॥ एते मान कृपालनि रषि मन नैंननीर भरि
आयौ ॥ ४ ॥ जद्यपि हम सकुचति प्रभुता सुनि हरिही अधिक
जनायौ ॥ वैसेहि सूर बहुरि नंदनंदन घरघर मांखनखायौ ॥ ५ ॥
रा ॥ जैतश्री ॥ हरिसों कहियो हो जैसें गोकुल आवें ॥ दिन दस रहे
सो भली कीनी अब जिनि गहरु लगावें ॥ १ ॥ नाहिन कछू सुहात
तुमहि बिनु कानन भवन न भावें ॥ देखे जात आपनी आंखिनि
हम कहि कहा जनावें ॥ २ ॥ बाल बिलास मुख गउ न चरन तरुण
वछरा पीवन पैं न हि धावें ॥ सूरदास बिनु रटति रैंनि दिन मि
लैं ही भलैं सचु पावें ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ जदपति कों संदेस सखी री
कैसें कैं कहों ॥ बिना कहें मन ही मन भीतर कवंल गिभूल सहों
॥ १ ॥ जो कछु बात अपने चित अंतर रचि पचि सोचि रहों ॥ सुख आ
नत ऊधौ तो चित तब लगि हुत बिचारु न हो ॥ २ ॥ तो कछु समी रव तुम
रेहु सयानी जाते धीर गहों ॥ सूरदास प्रभु कों सेवक सों विन
ती करि निबहों ॥ ३ ॥ रा ॥ सोरठि ॥ कबहुं धौं एसी यह बात कहों ॥ त
जहूं मोचौ लहु नंदनंदन हित करि दुख निरहों ॥ १ ॥ तुम ब्रजस
माधानके कारन पठए कहतु संदेसु ॥ अधिक आय आरतिउ
पजाई मेटहु विरह कलेसु ॥ २ ॥ इक तुमनि कटरहत हों तुनके
जोंनत सकल सुभाय ॥ सोई आगरे रीति बहुर रसन छांड हु अ
गमउपाय ॥ ३ ॥ हम कहां करें कमललोचन कै जब की नीमद
हास ॥ सूरदास प्रभु क्यों बिसरत नि है नषसिष अंग प्रकास ॥ ४ ॥
रा ॥ सोरठि ॥ हरि ब्रज कब हिक यौंहैं आवन ॥ सोंचे मधुप सुना
इमधुसमोहि बिरह बिथा बिसरावन ॥ १ ॥ हों यह बात कहंगा
नौं सखि जात मधुपुरी छावन ॥ अपनी बूक कहां लौं मांनो अ
ब लागी दुख पावन ॥ २ ॥ सवनि सिंगार सेज सम पावक ससि
सीरो तन तावन ॥ कव वे अंचल उरकर गहिहैं दुसहदाघ घन
सावन ॥ ३ ॥ रा ॥ सोरठि ॥ सखी री मथुरा में द्वै हंस ॥ एक अकूर और

Shrimad Gokulnathji Maharaj

एऊधोजोनतनीकेंअंस ॥१॥ एहूतेउघ्योरजनीरपहिचानतइनही
वधायोंकंस ॥ इनकेकुलएसीइचालिभाईसदाहजागरवंस
॥२॥ अजहूंकृपाकरोंमधुवनपरजांनिआपनोंअंस ॥ सूरसुजो
गसिखावतअवलगिसुनतहोइमनभ्रंस ॥३॥४॥ धनाश्री
बहुतदिनगएऊधोंचरणकमलविसुखही ॥ इसनहीनतृषि
तहीनखिनुखिनुविपरहसही ॥१॥ रजनीअतिप्रेमपीरवनघ
नाहीधरेंधीर ॥ वासरमगुजोवनउरसालितावहेंनयन
नीर ॥२॥ जवलगिहूतीअवधिआसमोईगनिघटरहेस्वास
अनिविथोगाविरहीतनुनजिहेंकहेंसूरदास ॥३॥५॥ सोरठि
एनेमानकहांहौंकुविजापाएहेंहरिपोतु ॥ इतनीदूरिभएह
रिओरेंविसरोंगोकुलगोतु ॥१॥ केसेंसहेंस्यामघनसुंदरविरहि
निविरहिनिसोतु ॥ तुमहीकहौंविथाहिरेंमहिजैसीतनकोंतु ॥२॥
आएजोगसिखावनऊधोंसुरभिवंसहजनोतसूरदासप्रभु
तवाहिजीवाहिगंइदेखेंमुखउद्योतु ॥३॥६॥ सारंग ॥ वारककांन्ह
करोंकिनिफेरो ॥ राखनदेमधुवनकोंसिधारोंमेरेलेखेंसुख
इतनोंबहुतेरो ॥१॥ भलेहिमिलेवसुदेवदेवकीजननिजनक
निजकुटुंबघनेरो ॥ काहिअविलोविरहेंहमऊधोंदेखिदुखुन
हनसोमातिवेरों ॥२॥ तुमजिनिकोअनाथप्रतिपालनजाजरि
नाउकुसंगासमेरो ॥ गएसिंधुकोपारउतारेंअवयाहसूरणकों
व्रजवेरों ॥३॥७॥ नट ॥ नाहुजाहूऊधोजानेंहो ॥ जैसेंहुतितैसेंतु
मसेवककपटचातुरईमानेंहो ॥१॥ निर्गुणजोगकहेंतुमपा
योंकहोंकोनअनआनेहो ॥ महुउपरसरेहलेंकुवजाहिनाके
हाथविकानेहो ॥२॥ मनतोहरिलेगयेहमारेकहोंकोनमति
ठानेंहो ॥ सूरदासअनघेरेऊधोंनागरिरूपभुलानेहो ॥३॥८॥ रा
गसारंग ॥ मांनोंभारएकहीसांचे ॥ नखसिखकमलनैनकी
सोभाएकमृगलतावांचे ॥१॥ इफजातकेसेंगुणइनमेंरूप
रअंतरसांम ॥ हमकैंकेंगयंदवतावतवचनकहतनिहकां
म ॥२॥ एसकअसितदेहधरेंजेतेसेईसखिजांनि ॥ सूरएककैंए
कआगरोंयामथुराकीखांनि ॥३॥९॥ सोरठि ॥ काहियेतासोंजो
होयविवेकी ॥ तुमतोंअलिउनहीकेसंगीअपनीवातकेटे
की ॥१॥ एसीकोठालीबैठीहें तोसोंमूंडचढावें ॥ सूरोंवातनतसी
फटवेंजैसेंकनतोंहाथनआवें ॥२॥ अजहूंतोंअगाहूंडनष्वां

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा॰ गुनहहू मूरख मतिभोर ॥ मनक्रमवचन सूर अभियं तरनं दं
२६५ दनसिर मोर ॥३॥ रा॰ सोरठ ॥ बातें कहत सयाने की सी ॥ कपट
तिहारो प्रगट देखियत ज्यों जल नाये सीसी ॥१॥ होतो कहतु
तिहारी हित की काहे तें मोभरमति ॥ हमहू मया तिहारी तोक
छू पारी सी मरमति ॥२॥ छाय बसाय गई सु फल क सुत नेक
हु लागी बारन ॥ सूर कृपा के प्राण ऊधो तापरे वाडारन ॥३॥
रा॰ सारंग ॥ आए नंदनंदन के नेव ॥ गोकुल आनि योग विस्ता
रो भली तुम्हारी जेव ॥१॥ जब वृंदावन रास रच्यो हरि तब ही
वक तनु महे व ॥ अब कुब्जा के जोग सिखावत भस्म अ
धारी सेव ॥२॥ अबलनु कौंतु मयहूम तुमान्यो ज्यों जोगिनि
कौं भोग ॥ सूरदास प्रभु सुनत आधे कर रब आतुर विरह बियो
गु ॥३॥ रा॰ सारंग ॥ नंद अलि कहा परयोहै पेरी ॥ बरनत स्याम अ
जु भयो हम कों नचत नाहिनें वे दें ॥१॥ पहिलें अपर अपसहत भयो
ज्यों चढिकें भार खेह ॥ जिहि तन सुरसुत कौं सुख है ह
रे सा कही हे ॥२॥ तजि लीला सु मोरंग अपनो काहे कौं
लत ऊपें ॥ इहि आदर पालन हूवे नहीं दरतन सूर पलें ॥३॥
रा॰ सारंग ॥ मांधोनें कुबरी बाई देहु ॥ बातनि के पलरे पातन
मों जो भावें सो लेहु ॥१॥ भूली फिरति ठगी सी डोलति तेया
म अरूझेहु ॥ जब तें इन अपराधीनें ना नि ह टकतकियो सनेहु
॥२॥ कहियो मधुपजाय पालागो विरह कियो तन खेहु ॥ सूर
दास प्रभु प्राणपथिक कों तुम हि निहारो लेहु ॥३॥ रा॰ सा
रंग ॥ हम तें नव हि तें जो भूलियो ॥ जादिन तें मधुकर मन मो
हन मधुमन गावन कियो ॥१॥ रोहित मनेह सरोरुह सबन्दि
श्रीखंड भस्म चढाए ॥ पहरि मेखला चीर विराजत पिफि पि
पि फेरि सिवाए ॥२॥ बांधे वेषु कं अंगी पिय सुमिरि सुमिरि
गुण गावत ॥ कर खरखेतं डंडर पावन सुनत सान दृषधा
वत ॥३॥ भोग भुगति भूलें भावें नाहि फिरें विरह वैराग ॥ गोप
लखा वपु कारन आरत रसर सना अनुराग ॥४॥ क्रति अव
तंस मैन मुद्रावलि अवलि अधार अधारी ॥ दरसन भिक्षा
मांगत डोलत लोचन पत्र पसारी ॥५॥ रमत न चितउदास
फिरत प्रति वन वीथनि दिन राति ॥ आवत कं बहुं कुटंब
दास हितधारि कं स्क सोउ न सुहाति ॥६॥ परम सुरति नाथ

Shrimad Gokulnathji Maharaj

हाथ सिर दयौ मंत्र उपदेस॥ चतुर्वेद की मथुरा नाथ सो कहि
यो अब आदेस॥२॥ को देख्यौ भागीयाश्र नमें जोगा दैन है आए
जानी सिद्धनि हुते सिध की जिनि तुम यहां पठाए॥५॥ सूर
दास प्रभु न तुलसी खायौ है हमारे सोई ध्यान॥ तुम अलि औरे
हि ठौर चलावहु अपनौ फौटक ज्ञान॥६॥ रा॥ सारंग॥ मधौ
देऊ एक हिमन तें भए॥ ऊधौ अरु अक्रूर बधिक मह कुब्ज अ
खिट हए॥ बचन पांसि बांधे माधौ मृग उन रथ घालि लए॥
इनहीं हुती मृगी गोपीजन मायक ज्ञान हए॥१॥ बिरह अ
गनि कौं दवा दैखियत इह्हां दूसि लायदए॥ अवधौं कहा
कियौ चाहत हैं सोचत नाहिं नए॥३॥ परमारथी ज्ञान उप
देसत बिरहिनि प्रेम रए॥ कैसें जिया हिं स्याम बिनु सूरज बु
बक मे घगए॥४॥ रा॥ सारंग॥ माधौ छांडि दई पहचानि॥ त
बतैं बिरह कुटिल या गोकुल की नीहैं निज खानि॥१॥ तनु
जि जिजांनि आंनि अवनी उर इहहु रभी तरहैं॥ पावन कान्ह
खिन खनन कौं मसमिकि रनि दुरी आहे॥२॥ स्रमं जन अ
ले नैंन द्वार हेइ रह्यौ हियौ भरि पूरी॥ निकसतु नहीं उपाय
रलज्यौं गयौ स्याम संग दूरि॥३॥ तुम सौं बात और अलि
भाखौं उलटि ध्यान बप पौसै॥ छैन पलरत न अजाइ दूरख।
कहैं सूर कौ नीतै॥५॥ रा॥ सारंग॥ तुम अलि कमल नयन के
साथी॥ देखियत कोऊ काज कौ एसै होत धूम के हाथी॥१॥ सुं
दर स्याम मंडमंडल कुंज अमजल अमकन छाजें॥ जोग ज्ञान
के दसन भोग रद कौनी कुबारि राजें॥२॥ नवसि सुहृत के कुमा
कुमार अस्सु रहित पातें प्रीत मुजानें॥ अव भए विवस जाइ
दासी के अंग तजि प्रगट पुरानें॥३॥ रा॥ सारंग॥ माधौं मधुप
रीति मांनी॥ एक बार बिनु घोष उमगि रितु बरषा आइ तु
लानी॥१॥ घन सुधि नेह बेनबूंदे आति प्रबधि दामिनी कौ
धति॥ दादुर कांम बियोग मोरम नु पथि कहु जग रहचौं धति
॥२॥ अवसकुमार अंग प्रवनि सवत जे गुण गंध पानि भाखे
आति कुलबंत जात सब जानन गहें फेंट तिन राखे॥३॥ जदु
पति कुबरी के कहियत हैं ए जग चलत कहांनी॥ सूर सिगा
र बनै के सें अलि अंगि विआ जियें कांनी॥४॥ रा॥ सारंग॥ अ
ब हरि औरे ही रंग राचे॥ ऊधौ सरस सखा तुम कहियत मने

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा॰ सयानप कांचे ॥ १ ॥ बालापन तें निकर्ख व सत हौं सुन्यों नाक प्रबो
२६६ नों ॥ तैसें बास वसत हैं कोई तैसें हो तु सयानों ॥ २ ॥ जे उपमा पट
तर लेंदीजे ते सब उनकी लायक ॥ जो पें अलबर हू इबारिस
तादि सएअनंननायक ॥ ३ ॥ जोपें यहां वाहतहे निज कपिहू रिस
वही भरी पूरि ॥ आवागमन करत हो काकों को लगु कांते हूरि
॥ ४ ॥ जे जे बुद्धि सिखावहु हमकों ते सब हम हि अलेखें ॥ सूर सु
मन सात व सुख पैहें कमलनयन कों देखें ॥ ५ ॥ रा॰ सारंग
माधों मानिहि न हारि ॥ तौ तु व सुख एजोगा संदेसें दीन्हें हें गहि डा
रि ॥ १ ॥ घंटानाद गीत मुरली धुनि मन नकु संगा संग राखे ॥ महि मार
त नाहि मिलत अंक भरि अनुरस खवा संगन राखे ॥ २ ॥ नैंन लखनि
चातृक ज्यौं जानत रनि मांन तगाहि गारा ॥ कोरि करि जतन प्रा
ण राखे बिनु सूर स्वांति हूरि पारा ॥ ३ ॥ रा॰ मारू ॥ तब तें बहुरि न
मन नाहि दीनों ॥ ऊधो हरि मथुरा कुविजा हू रहे हैं सुब्रतलीनों
॥ १ ॥ चारि मास बरखा के आगम मनोरहू तैइकठौरि ॥ हम सी धाम
म पवित्र जानिकें नाहि रेखाति संजोरि ॥ २ ॥ ब्रजबासी सब ख्वा
लक हूतत हैं रिस गहि आवन रारि ॥ सूर सगुन लहें जान मधुपुरी भि
गुनना म भंग ॥ ३ ॥ रा॰ सोरठ ॥ पठवत जोग होत नहि लाजन ॥ सु
नियत जे ब्रजानि तें तानी कपट रामा फ विवाजन ॥ १ ॥ जियहीं
गहो कूर की छिवनि मोहू होतु नाहि राजन ॥ पहलपनी ति
कहें को नहें गुन गाहू नेहौ तजसु आजन ॥ २ ॥ मोहन सुरति न ही
की जाति दुख देखि पात जेहि माजन ॥ सब बुधि परी वचन कन
ढो बत ढके रहों सुख भाजन ॥ ३ ॥ कें दूल हीहि निदासी भए दूलहु
फिरत ब्याह के साजन ॥ सूर खडों भुव भूपव कें सह त्यों वा कुवी
के काजन ॥ ४ ॥ रा॰ सारंग ॥ या ब्रज सगुण दीप प्रकास्यों ॥ सुनि
ऊधो भृकुटी त्रिवेद पर निसदिन प्रगट अभास्यों ॥ १ ॥ सब कें उर
सर्वनिसने हूभरि सुमनतिली कों वास्यों ॥ गुण अनेक ते गुण
कपूर सम परिमल बारहूमास्यों ॥ २ ॥ विरह अगनि अंगानिस
वके नहि धूत न परें चौमास्यों ॥ ताकें ती निपु केयाहू रिसे तुम
सें पंच सरास्यों ॥ ३ ॥ आंन भजन तण सम परितब करत जो
ति उपास्यों साधन भोग निरंजन तें रे अंधकार तम नास्यों ॥ ४
बादिन भयों निहारों आवनु बोलत हो उपहास्यों ॥ रहन सकें
तुम सी करूपं कें निर्गुण का जउ कास्यों ॥ ५ ॥ बाढ ज्योति केस

Shrimad Gokulnathji Maharaj

रसलौंकूं औसानमवास्यौं ॥ दूरवासना सुलभ सवनारे जे
छेंरह्यौ प्रकास्यौं ॥ ५ ॥ तुमतो बिरपनिकरके वासी सुनिय
त हुते खवास्यौं ॥ गोकुल कछु रसरीति न जानत देखत न
हीं तमास्यौ ॥ ५ ॥ सूरस्याम के कीर परोसहु पिंपिरि चरत
जवास्यौ ॥ ५ ॥ रा ॥ सारंग ॥ कहिवे औरो रोजि निसकारवें ॥ लौ
वीमें डर ईहैं तुमकों बकन रहो दिन आंखें ॥ १ ॥ जाकी बात
कहत तू हमकों सूभोर होमैं कांधी ॥ तेरो कह्यो पवनको
भुस भयो उडे जान ज्यौं आंधी ॥ २ ॥ कहत श्रम करतु सुनत
कोउ हाहा हो तू सुवनकों गोयो ॥ सूर इतेहू मांझन सूझत नि
पट नैंनकों खोयो ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ प्रीति उहि रे सनको उज्जां
नत ॥ तौ तू बात कहत अलि ऐसी बिनाहि दृष्टि पहिचानति
॥ १ ॥ जिन गोपाल ग्रहग्रह ब्रज भीतर चोरी लें दधि खाते ॥ ते
अब दुखित देखि ब्रजबासिनि दूरि भाजु रह्यौ ते ॥ २ ॥ सूरकुटि
ल जित नैसु नियत नहिं लोग पुरातन गा लैं ॥ नरखासि खलो
बिस रूप बसत है मधुबन नाम कहा लैं ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ ह
म पर हेतु करे रहिबो ॥ बहरि नमौ बिसरतु नाहीं किरिपि
रिकों चहिबो ॥ १ ॥ देखे जानत हे अपनी अंखियां या तें न कों र
हिबो ॥ पाछे जको बोहार सो भयो सब प्रभु सों कहिबो ॥ २
श्याम सरीर कमलदल लोचन कबहुं रस लहिबो ॥ सब
सुख लाउ लडा सुरप्रभु वे ही धुरा रहिबो ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥
हरि बिनु कैसे राखों प्रांन ॥ पहिलें ही रंगारंगी स्याम रंग अब
न चढत रंग आंन ॥ १ ॥ कांगा रहू ठोले रखन हूठी मसि रूठी परवां
न ॥ नेजे वचन कहे हरि तुम सों हूठे हमारे जांन ॥ २ ॥ स्याम सुंद
र की बतियां हूठी हूठे तुम अंग अबांम ॥ सूरदास प्रभु बेगि मि
लहु किनि बिथा बिरह पहिचांन ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ बिलगु रहू
मां नाहिं ऊधो जाको ॥ तरसत नहें व सुर वे रवकी नाहिं न मात
पिता कों ॥ १ ॥ का के मातु पूत को का को दूध पियो हरि जाको
नंद जसोदा लाड लडाए नाहिं न भयो ही ताको ॥ २ ॥ कहियो
जाय बनाइ बीनती जोहि तु है अबला कों ॥ सूरदास प्रभु प्री
ति है कासों कुरिलनि लेपो कुबिजाकों ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ हमोहि
तो इतने ही सों काज ॥ कैसे हूं अलि कमल नयन कों ब्रज लें
आवहु आज ॥ १ ॥ और अनेक उपाय तुम्हारे बिकल करो सु

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा॰ बिराजु ॥ कैसें हैं निबहत अबलनि पैं कठिन जोगु कों साजु
२६० ४॥ नखसिख सुभग स्याम तन की छबि हरत सन हरत बिर
बछु ॥ सूरदास मन हरत कों न बिधि बरन बिलोके बाजु
३॥ रा॰॥ सारंग ॥ जौ लगि हृदैं ज्ञान नहि आवै ॥ जौ लगि कोटि
जतन करौ कोउ बिन बिबेक नहि पावै ॥ १॥ न्याइ बिचारि स
पन सो बत में देख्यौ है सब जोइ ॥ नाना रूप मध्य ज्यौं व्यापक
आगार मथें तें होइ ॥ ४॥ तुमहीं कहत सकल अंग व्यापक
अरु सबही तें नियारे ॥ नखसिख लौं तनु जरत निमा रितु
निकसि करत किन सिपरे ॥ ५॥ सांचे बोल सबैं बोलत हो
ज्यौ मुख मेलें तुरसी ॥ सूरसु औषधि हम हि बतावत ज्यौ
जुर कफ परें गुरसी ॥ ६॥ रा॰॥ सारंग ॥ संदेसनि सुनत प्रीति गि
त जांनी ॥ बांतन कहांति बूंदलौं सागर कबी बताबत पांनी
॥१॥ बिन गुन मोह बध्यौ प्रभु केंनल कैसें सी कनक लकीनी
अरध्यौ मधु पठपंद खन तुम यह सुरति हम लीनी ॥ निर्गु
ण के ऐसे गुण सुमिरत सखि अलि सखा सनेही ॥ ज्यौं हपलि
यें क्यों नाम सों हितु सूरसुर खाबत रेही ॥ ४॥ रा॰॥ सारंग ॥ सबन
लत जे प्रेम के नाते ॥ सांति बातन कनहि छोडत अगर पु
कारत ताते ॥ १॥ सुकत मीन नीर की बाते तऊ प्रांन हांनि हा
रत ॥ सुनत कुरंग नाद रस पूरन जदपि व्याध सर मारत ॥ २
निमिष चकोर नेंन नहि लावत ससि जोवत जुग बीते ॥ को
टि पतंग जोति बपु जारें भए न प्रेम घट रीते ॥ ३॥ अबलगि न
हि बिसरी वे बातें संग करी ब्रजराज ॥ सुनि ऊधो हम सूरस्यां
म कों छांडि देह के काज ॥ ४॥ रा॰॥ सारंग ॥ मन की मन ही मांझ र
ही ॥ कहियें जाय कोंन सों ऊधो नाहिन परत सही ॥ १॥ अवधि
अधार आवन ही की तन मन बिथा सही ॥ चाहति हुति गु
हारि जिन्ह तें तहांतें धार बही ॥ २॥ अब यह दसा देखि निठि
वें ननि सब मरजाद रही ॥ सूरदास प्रभु के बिछुरें ते दुसह बि
योग सही ॥ ४॥ रा॰॥ नट ॥ कहियौ प्रति अबला दुख पावै ॥ हिम
पवन अति प्रबेस तन ज्यौं है बार बार समुझावै ॥ १॥ सारंग रिपु ता
पति सिपु बारिपु ता रिपु तन नहि सुजारें ॥ हरि बाहन बाहन प
ति घायक ता सुत अंनि बचावें ॥ २॥ सुररिपु गुरु बाहन ताहि
पुताना चढि भेष दिखावें ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कों बि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

रहिहिनि तपति कुम्हिलावें ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ हमतें सब बातनि सचु पायो
गोरस पिवाय पिवाय रहे पें पुनि पालनें झुलायो ॥ १ ॥ देखनि रही
फनि नाग की मनि ज्यों गुरुजन पन्यो न भुलायो ॥ अब न हीं सम सुफ
नि कों न पायतें बिधना सो उलट्यो ॥ २ ॥ बिनु देखें पल कल न
परत छिनु एचित रहीं चायो ॥ अब हि क्योंर भए ब्रजपति सुत
गोवत सुहू न धुवायो ॥ ३ ॥ तब हम रूधि रहीं के कारन घर घर
बहुत खिजायो ॥ सो अब सूर प्रगट है लाग्यो जो गरु ज्ञान प
ठायो ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ ब्रज परम रहन कह कर ई आई ऊधो रे सम सु
पुरी वासी कहियो हरि सों जाई ॥ १ ॥ गाजि चलेच हुरि सनेवार
ज्यो पन बंध बजाई ॥ पावक प्रसर प्रसवार कों सके सुभट बल सम
सुराई ॥ २ ॥ अति बड घटा सुडि खग पंगति सो हरि सिनि धनापक
हराई ॥ चातक पिक सिखि हम सासवा चढि अब ताते घरी सुनाई
॥ ३ ॥ करि निरखंगन कसि कुटिल धनुष लें मानह अबार बोलाई ॥ सु
ख अबदिं हरि खाय सूर प्रभु अब कि निलहु छिडाई ॥ ४ ॥ राग
कान्हरो ॥ जैमन कर र लुवथनू मधु सुत सुलक मल थांडि कत
करन अमनें ॥ नहि सौरभ परवस बुल कहु ता म हूतें रसजान
केलिवन ॥ सरस्रग गार भुवनद्द षट रट तकी रमुनि मुनिन
अवन ॥ कहां कोंन दरीतें देख परप कहीं बिचार कियो ब्रज अ
वन ॥ १ ॥ प्रथम मिसा गुसुजनन मकों फल भेट धरी साधनाय व
न ॥ कैसो कहि गई सो तजो गनिकी सूर अछि न राधिका रवन ॥ ३
॥ राग धनाश्री ॥ अखियां हरि रसन की प्यासी ॥ बिनु देखें पल ज
गा सम बितवति वैजीवें ब्रजवासी ॥ १ ॥ घर घर छांडें बन बन
नडोलत ला सें फिरत उदासी ॥ यहें सुहाग रैं निदिन कहियत
हैं निर्गुण अबिनासी ॥ २ ॥ ज्यो बिनु भोर कमल सामता सित
पो प्रेम की फांसी ॥ सूरदास प्रभु यों बिनु लागत जैसें मीन
जल सांसी ॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ सुनि उनरा कि निकों नरंद म
धुकर बात सखी अंगनन की ॥ निकट रहति या ते बूझनि हीं
कथा चलत कानन की ॥ १ ॥ कैसें वेपु रहत मन मोहन कोन
प्रिया प्रानन की ॥ कोउ बिनिरखत बदन कमल की कासों
मन मानन की ॥ २ ॥ तुम अक्रूर व सुदेव देवकी सभा भली जान
न की ॥ कैसे करि सकें विषय जल नी रथ काहू चितें वानगा की ॥ ३

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा कहिहौं सबैं प्राणनायक सों तुम्हरे गुणगानन की ॥ सुनत सू
२६८ र की कौं भयो जोग जु गोपिन मन ध्यानन की ॥४॥ राग आसाव
री ॥ इतनी जांनि परैं जो ऊधो मन पंछि ता बांधरैं नहीं ॥ केसरी
तात रंगिनी कौं गति उपजति जाति वही ॥१॥ माला कोर इलाय
नं इक्कों गोपी वेलि सुही ॥ कौं सुकवत करुणाजल विन पुनि
पे यतु वनें महीं ॥२॥ अग्नि उपजि जब जब इंद्र स्वन यो गयु
गति निवहीं ॥ नैसो सम यभयो अब ब्रजमें जो बुझावे अब हीं
३ ॥ सुनत कथा मुखवचन सखी के ऊधो ग्रंथ ग्रही ॥ सूरस्यां
मनि हि छिनु तहां प्रगटे याते चलत कही ॥४॥ राग आसावरी
स्यांमतनाके लए मधुप की इंद्रांते सुनि लीनी ॥ में जानी सखि
कछुहूं पें कछु नाहिन कान्हकौं करनी कीनी ॥१॥ कहि सुवती
बनाय लघुता कीनी ॥ वडाय अपप्प रूकी पकथा माधुरस
भीनी ॥२॥ धर्म कियो सुजाल भिन्न लकुभाल लइ फरी ॥
लि मृगी वमाति फीनी ॥ तानके सुनत मुनि ज्ञानमन उपजत
जिहिके वदलें हम भई मतिहीनी ॥३॥ राखिले हु सूर स्वामी जो
संदेस अंतरजामी लाग रभूप रूप काल समपीनी ॥४॥ रा
ग कल्यान ॥ जाहु जाहु आगें ते ऊधो पति राखति हों तेरी
कान्हकौं जिय पठी सरि वाचत देखति आंखि बरति हैं मेरी ॥१॥
तू तु कहत हौ सांत है गोविंद याहि यतहैं कुबिजा उहि घेरी
इंक्कलि ते सेई तैसे ए अहीं एक कें सकी चेरी ॥२॥ तुम सखि
के वसी छपठाए कहियें कहां बुद्धि उहि केरी ॥ सूरदास पहि
ली सुधि बिसरी देत हु तेग्वालन संग हेरी ॥३॥ राग सारंग ॥ ह
मारें को वन जोग आराधें ॥ बूरु आं फेरी दंड अधारी इन मूंन
निकों ननु वांधें ॥१॥ आसन पवन विभूति मृगछाला इन ने
कौं को सांधें ॥ सूरदास हरि मांनिक पर हरि छप गांठि कों
वांधें ॥२॥ राग गौरी ॥ स्यांम तुम्हरी एबानें ॥ अपनी चोंप कों सु
हृकी कहत नहीं भूल नहीं सु अवहि उठि जानें ॥१॥ स्यांम सरी
र के हैं षटपद गुण आति हीं लुबध फिरत दिन रानें ॥ रानीरे
खिकनेरि कली ज्यों अंतर सेत कपट जिय यातें ॥२॥ जिह्वा
कोटिवक तहूं न वनई अति विचित्र अटपटी घातें ॥ कहां लों
पा छो करें सूर प्रभु वारक सिलहु प्रीति के नातें ॥३॥ राग म

Shrimad Gokulnathji Maharaj

ला र ॥ स्यांमकौ यहै परेखौ आवै ॥ कैं कहूं प्रीति करणनाथ कृ
त अब कुबिजा मन भावै ॥ १ ॥ तब कत पानि धर्यौ गोवर्द्धन क
त ब्रजपति हि छुडावै ॥ कत बहु वैंन अधर मोहन धरें लै लैं ना
म बुलावै ॥ २ ॥ तब कत लाड लडाय लडैंते हसि हसि कंठ लगा
वैं ॥ अब बहु रूप अनूप कृपा करि नैंननि हू न दिखावैं ॥ ३ ॥ जा
मुख संग समीप रैंनि दिन सोई अब जोग सिखावै ॥ जिनि सु
ख अंमृत रस नाभरि सो कैसें विस प्यावैं ॥ ४ ॥ करमीडत
पछितात निहि यों भरि चकचकम मन समझावै ॥ सूरदास यह भां
ति वियोगिनि तातें अधिक दुख पावै ॥ ५ ॥ राग मलार ॥ लिखि
लिखि कत वपठावहु कागर ॥ हम अबलनि पर मया भई है
भए कुबरी वसनागर ॥ १ ॥ ऊधौं जोग कहा लैं कीजें जल बिन म
को सागर ॥ कहियों मधुप कहा वके धोलैं कोटि है वैरागर ॥ २ ॥ क
हियहु प्रगट मंद्र सजिनत हि वे मधुवन स्यांम उजागर ॥ सूर
स्यांम बिनु कौ भमनरा खहि तन जो वन वलि आगर ॥ ३ ॥ राग म
ला र ॥ सखी री मो मन धीरव जात ॥ ऊधौ कहत रहत नहि ए मधु
पुरि गत आगत नष्ट कांत ॥ १ ॥ इतनें बातें आगें मधुकर म
न पाइस नरात ॥ फिरि चाहौं तो पाण नाथ इत सुनत कथा
मुसिकात ॥ २ ॥ हरि सौं चेरी सब गहे जेनि गुण जस गात
सूरदास निहि सब जग रहै कौ तेइन कौं डहकात ॥ ३ ॥ राग
मलार ॥ जिय सों सुरति का रतिहू रिवी ॥ घोष बसती पीसहूमा
रिक छूं नमन कहू ही ॥ १ ॥ ऊधौं एक बात हू ग्रेजू सों समो पाय
कहिवी ॥ परम जात जदु नाथ जानि की गुण विचारम हिवी
२ ॥ एक बार दरसन सुख देकें विरह आधि दहिवी ॥ सूरदास
प्रभु पानि गहन अरू बचन लाज गाहिवी ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ भौ
रा काहे कों भयौ उदासी ॥ बपु तेरो कारौं वदन उपीरौ तू कलि
सों कहं आसो ॥ १ ॥ सब कलिका कौ रसु लेकें पुनि बैउ करी
निरासी ॥ सांचौ सूर स्यांम को सेवक जोग जुगति सु उपासी
२ ॥ राग गौरी ॥ ब्रजनैं देरि तु पैं नगाई ॥ पावस अरु ग्रीषम प्र
चंड सखि हरि बिनु अधिक भई ॥ १ ॥ ऊरध स्वास समीर नयन
घन सब जल जोग जुरे ॥ वरषि जु प्रगट किये दुष दादुर हु
ते जु दूरि दूरे ॥ २ ॥ विषम वियोग दुसह दिनकर सम दिन उठि
उदय करे ॥ हरि बिधु विमुख सुतो कहि सूरज को तनन ताप हू

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. ॥ ३ ॥ रा ॥ गौरी ॥ नाहिन ब्रजनंदकौ कुमार ॥ परम चतुर सुंदर सुख
२६६ दायक तनु कौ प्रिय प्रतिहार ॥१॥ रूपलकुट सबलिलए रहत है
अनुदिन नैंननि द्वार ॥ श्रवननि बिनु उरभवन न भयो है सिव
रिपु कौं संचार ॥२॥ निसा निमेष कपाट लगे बिनु ससिमुख
तत न सार ॥ सूरदास ऐसें रहि आसन छांडत सुमिरि अवधि आ
धार ॥ ३ ॥ रा ॥ सा ॥ रं ॥ ऐसें जो हरि फूं आंवहि ॥ निरखि निरखि ब
दन नैंन मनोहर नैंननि बहुत सुख पांवहि ॥१॥ तैसिय स्यांम घटा
तैसोई हरि बिच बगापंक्ति दिखावहि ॥ तैसोई गोरकुला हल
मुनि कैं सखी हरि खिहि हुरै नागांवहि ॥२॥ कबहुं कदंह मिस
संग जु खेलें कबहु निकुंज बुलावहि ॥ कबहुंक लें संग सखा
सैल चढि मुरली मधुर बजावहि ॥३॥ बिछुरत प्रान रहे कैसें
कौ बहुत भांति समुझावहि ॥ जितही चलन जानि सूर जप्र
भुति तहिनि तहि उठि धावहि ॥ ४ ॥ रा ॥ धनाश्री ॥ नंदनंदन सों
इतनी कहियों ॥ जद्यपि ब्रज अनाथ करि छांड्यो वारक हम
पै आवन रहियों ॥१॥ तिनुक गोरिको ज नबहु रारत हो एक बास की
लज्या गहियों ॥ गुण औगुण सब मोरिहमारे दास दासिनि
की इतनी सहियों ॥२॥ तन बिनु प्रान अबैं छांडति हैं अवए
लोचन सुपनें लहियों ॥ सूरदास पाती लिखि पठई नहींप्री
तिनहूं औरा सिखि हियों ॥३॥ रा ॥ सा ॥ रं ॥ ग ॥ ऐसें यह मत योग अ
टपटो कौ पाय परों ॥ कहूं रसरीति कहां मन सौध नु सूनि
मुनि लाज मरों ॥१॥ चंदन छांडि विभूति बनावत यह दुख कौन
भरों ॥ आनंदरूप रह्यो उर अंतर निर्गुण रहि कहां करों ॥२॥ नि
सदिन रसना जपत स्यांम घन मौन न निवेरौ बघरो ॥ नासमा
रि तुम ध्यान बतावत वे सरिक हां धरों ॥३॥ मुद्रान्यास अंगा अ
गभूखन पतिव्रत तैं न टरों ॥ सूरदास प्रभु यह अंतर में हरि
मिलन नहि बिछुरों ॥४॥ रा ॥ ग ॥ नट ॥ माई यह मधुपनि की रीति
नी रसु जांनि तजों छिनु भीतर न बल्लकु समकौ प्रीति ॥१
जिनहि संग करि सेवक केवल बैंठो आवें परतीति ॥ हमहि
छांडि बिरमे कुबिजा कें आए ना दहि जीति ॥२॥ जिनि पति
यों उमधुर सुनि बानन आए करन समीति ॥ सूरदास ऐसें
संग स्यांम कौं ज्यों भुस पर की भीति ॥३॥ रा ॥ सारंग ॥ गानी आ
ली ऊधो की चतुराई ॥ ब्रजमंडल की दसा देखि कें कपा नवें

Shrimad Gokulnathji Maharaj

विसराई ॥ १ ॥ परमप्रिया देषन पठए कहि मति जोग वनाई ॥ उ
नकों आनभाव विछुरन कहि वेवतियां ल्याई ॥ कहांक
स्रौं हरि कहां सुन्यौं तुम कहां लीला सुखगाई ॥ न्याय पिवि बुध
वेउ जरु कुलमे नेकु नवढौ वडाई ॥ ३ ॥ गुणमय मित्र सदा श्री
पति के मुक्ति पुरी अवगाई ॥ नहि देखी व्रज वनकी लीला सू
ल्यांम करि काई ॥ ४ ॥ रा ॥ गौ ॥ री ॥ तुमहि मधुप गोपाल दुहाई ॥ क
बहुं कें स्याम करत इहांकों मन क्यों निपट चित सुधि विस
राई ॥ १ ॥ हम अहीरि मतिहीन बापुरी हटकत हूं हठि करत मि
ताई ॥ औ ईनागर मथुरा निरमोही अंग अंग भरे कपट चतुरा
ई ॥ २ ॥ सांची कहहु देहु श्रवणनि सुख छांडहु छिपा कुटिल
धूताई ॥ सूरदास प्रभु विरह लाज धरि मेटहु इहां की लोग ह
साई ॥ ३ ॥ रा ॥ गौ ॥ री ॥ कैसें जावें ऊधौं हरि पर रे सार है ॥ को खिव
र खि हरि भरजन लागे न दीयौ नार वेहै ॥ १ ॥ कहि पठयौ मधुप
री सखी मे रहैं तो चरणगहे ॥ वासरगण सिंगार तमा रगचा
तक रैनि डहें ॥ २ ॥ कासौं कहौं तपत मनहि सिसिर दिनको इह पी
रहें ॥ हम हूं कि निलेजाय सरप्रभु कौ व्रज दुख हि सहैं ॥ ३ ॥
रा ॥ सो ॥ रठि ॥ उघरि आए कांनू रूप स्की खांनि ॥ सरव सु हृयौं
बजाय बासुरी अब छांडि ओहि चांनि ॥ १ ॥ जिनि पय पिवत पू
तना मारी दासकरी वहांनि ॥ बलि छलि बांधि पताल पठा
ए नें कु नवीनी मांनि ॥ २ ॥ जैसें बाधि क आधि कम गाविधव
त राग रागिनि तांनि ॥ अवधि आस परतीति ओट दे हनन
विषमसरतांनि ॥ ३ ॥ जैसें नार सरदर तजन उरते तुम ऊधौं अ
तिजांनि ॥ सूरदास प्रभु के जियभावें आय सुमाषें मांनि ॥ ५ ॥
रा ॥ सो ॥ रठि ॥ कहियो मधुप जाय हरि सों मेरो मन अरु कैनैं
ननिके लेखें ॥ इहें दोषदेदै झगरत हैं तब निरखत हैं मुख
लगि कैनि मेखें ॥ १ ॥ जैसें नतही बनाय बदतियौं लगी प
लक जड़ नाके पलेखें ॥ तैसब दइन पें अब भरि चाहत विधि जो
लिखें दरसन सुख लेखें ॥ २ ॥ इहि विधि अनुदिन जुरति जत
नकरि मन न गई अरी अब रेखें ॥ सूरदास इनि झगरनि
नहि चित घरत नव दनविनु पेखें ॥ ३ ॥ रा ॥ सो ॥ रठि ॥ कहहु वाहां
हम तें विगारी ॥ कोन अन्याय जोगलिखि पठए है सिव सेवा
कबहूं नकरी ॥ १ ॥ पाषंड प्रीति करी नंद नंदन अवधि अघा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. रहुती मोरी ॥ सुरश्याम उठ बोले आए व्रज वनिता पहिरी सिंग
२७० री ॥२॥ जानि सुभाउ मिटत नहिं सजनी अंतन ऊकोरी छिकरी
सूरदास प्रभु वेगि मिलहु किनि नातरु आए जान डगरी
॥३॥ राग सोरठि ॥ जोग कौन सों हरि पाए ॥ निज आज्ञा तपश्चियों
विधाता के वरस रासनि नाए ॥१॥ जो मनु गति संकर आरा
धी परम तत्व लौं लाए ॥ भुज धरि ग्रीव कवहिं रुनं रुनहिं
लि मिलि केल सुहाए ॥२॥ वक दालभ महारिषि कवहूं
त्रिन छाया न तकराए ॥ वरषत दूखित नांनि मन मोहन के
वगिषि वर कव छाए ॥३॥ प्रति तप पुंज विप्र दुर्वासा दुर्वा
त एते नित खाए ॥ चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कव मुख अ
नल समाए ॥४॥ वहु जाकि पौ मार्कंडेइ द्विज अजा सिंधु भर
माए ॥ सकल पवीती अव कहि किहिं विरहन पास मुक
राए ॥५॥ भक्त विरह कातर करुणामय वेद निंरितर गाए
को हैं जोग सुनत पह हूं ऊधौ सूरस्याम मन भाए ॥६॥ राग सो
रठि ॥ हमारें कौन जोग व्रत साधैं ॥ मृग त्वच भस्म अधारी कंथा
को इतनौं आराधै ॥१॥ जाकी कहूं थाह नहिं पइयत अगम
अपार अगाधैं ॥ गिरिधर लाल छवीले कौ यह कहा पछा
पौं पाधैं ॥२॥ सुनि मधुकर जिनि सरवस चाख्यौ सो सुख पा
वत आधैं ॥ सूरदास ऐसी मणि तजिकें घुंघुची गांठि को वां
धैं ॥३॥ राग सोरठि ॥ हम अलि कैसें कें पतियाहिं जा कौं जोनैं
रमन लागो हो कपिर ही कंठ मैं मनिया विना परोये धागे
॥१॥ तुमहि कहत निराहि रहत निर्गुण कहां सरहि तिहि काज
सूरदास गुण मिले मोहन रोम रोम सुखराज ॥ राग आ
सावरी ॥ ज्ञान धर्म के श्रोता वक्ता पैं वकाह मजाने हो ॥ अ
वगा धर्म नहियामा रामें कहत प्रीति के लाने हो ॥१॥ व
हु वल्ली लं पर जे मधुकर नहिं सुम्फल पहिचानें हो ॥ पंनि
सिक मल गंध लोभी कें तजत कठिन नान आनें हो ॥२॥ तुम
श्रोता मृग अश्रोता कहुं धौं वूझत हमहिं अयानें हो ॥ तुम आ
ए पर पल्लव तजिकें मृग निजात रहू तिवानें हो ॥३॥ प्रोउ
वक्ता अरु तुम वक्ता हो गुरु सिष रोउ समानें हो ॥ पढि आ
ए तुम मंत्र जोग को कहहु किजा केकानें हो ॥४॥ श्रम्ब माधु
री परम तप्रति भ्रनउ ऊतत प्रति छिन तुहाने हो ॥ ताते तुम फि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

रिजाहु मधुपुरी वाचक ताहि विगानें हो ॥ ५ ॥ अब हम तुम भ
ई इतनें हीं अपणपंक के रानें हो ॥ पूरन ता सिद्ध भई हम मा
नी भए देस के रानें हो ॥ ६ ॥ ऊधो वंचन कछू नांहि उपजत मुंह
रि वे सुमिकाने हो ॥ सूरदास सांवल रस मांतो बोलत अति
अभिमानें हो ॥ ७ ॥ रा ॥ सो ॥ वि ॥ अपनो रूप मोपि लो वन सुगा
माधो चले मधुदेस ॥ इत जोरयो पुरुष सुनि ऊधो अग्नि म
कियो प्रवेस ॥ १ ॥ बरन सजाति मिले मोहन सों औरदियो उ
पदेस ॥ तातें कछु न बिचारयो तुम हि तमति पठवो संदेस ॥ २
॥ रसन नतवे नैंन लें आयो स्याम रूव छन ब बेस ॥ सूरदास
न वृत्ति स्यामा की दुर्लभ बल्लभ रेस ॥ ८ ॥ रा ॥ सो ॥ वि ॥ कहां भयो
जु आसुर राजा भयो ॥ अबतो कछू औरकी और बांध्यो हें जक्के
भुजनयो ॥ १ ॥ अबलोनो छोरथोरा घर घर भोजन मांगिल
यो ॥ सोई अबकों ब्रज बिसरायो जहां चोरी ऊपन मुगयो ॥ २
कालिंदी तें ग्वालनि के संगा मथि पी बहूं ज घयो ॥ अबतु
म औररूअन सुकी नाहें सुन हु योगा लिखि पठयो ॥ ३ ॥ अब ज्ञा
नी बर परवीनी हम पर अरु अभिमान भयो ॥ सूरदास बतु
राई देखी कुबिजा चित हरयो ॥ ९ ॥ रा ॥ सो ॥ वि ॥ कहि आलि काके
मीत अहीर ॥ काहे को भरि आरि तुम उर हतें इतनें न नितें नीर
॥ १ ॥ आसुन पीय पिवाही ग्वालनि इनि गैयनि को खीर ॥ छि
नु छिनु सुपलु पलु सिमिरत नाहि याज सुनाकों तीर ॥ २ ॥ हरें भी
तर हौं लाग्यो हे दाहत सकल सरीर ॥ अंग अंग के तब तासु
नि सूरज संकरषण के बीर ॥ १० ॥ रा ॥ सो ॥ वि ॥ जेहि जेहि तजी ब्र
ज की भीर ॥ कहां कहों अलि हरि लखी तुम सों सखा सु दृखी
र ॥ १ ॥ मदन नृप ससि नें व अबलनि दुर्ग दूत समीर ॥ विपिन
सेना साजि नव दल बरत बैरी कीर ॥ २ ॥ फूल ही दुम सम धा
मानों चक ब चक कं कन बीर ॥ वकुभ कुंज रविरप भोरें आह चप
रसई र ॥ ३ ॥ चमू चंचल चल तनांही पावि तहां दूपुर तीर ॥ सम
दू मांन हू कीट की रट सुनि अति तियो धीर ॥ ४ ॥ कांम जातक
व्याधि बाधक कहूं कासों पीर ॥ सूर स्रिक सिरोमणी बिनु
जरत जमुना नीर ॥ ११ ॥ रा ॥ सो ॥ वि ॥ बिरही कहूं लों आय सम्हा
रें ॥ जबतें गंगपरी हरिपद तें तबतें बहिबो नाहि निवारें ॥ १
नैंननि तें बिछुरि औ हें भ्रम तेरह मासि अजहूं तन गारें ॥ २

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू०सा० मतेबिछुरीकमलकंटभएतिधुभएजरिछारें॥ बैंतुतेंवि
२२१ छुरीबीतिअवधिभईबेंरहिकोंननिचारें॥ सूरदासजाके
अंगविछुरेंऊधोकिहिबिधिपरचारें॥४॥ राग केदारो॥ उरमेंमा
खनचोरगडे॥ अबकेसेंनिकसतहैंऊधोतिरछेह्वैजुअडे॥१
तरुणिअहीरजसोरानंदनजरपिनजाततछडे॥ उहांकहत
जदुबंसमहाकुलहमहिनलागतबडे॥२॥ कोवसुदेवदे
वकीकोहैनाजानोंसोबूझें॥ सूरस्यामसुंदरबिनुदेखेंऔ
रनकोउसूझें॥३॥ राग नट॥ एअलिकहांसिखावनआयो॥ ए
तोंमेंनरूपरसराचेकहौजकरतपरायो॥१॥ जोगजुगतिहं
मकछूनजानहिनाकछुब्रह्मगिनायो॥ नवलकिसोर
मोहनमूरतिसूरतितासोंमनअरुझायो॥२॥ अलीभईतुमआ
येऊधोंदेखहुदसहरखारी॥ दछ्छणामिलायक्षुरघना
श्रारनिहूरहहमारी॥४॥ राग आसावरी॥ हमतोंमूरतनकोजिव
तिसविसाखी॥ तुमअलिरविलिखिकनलीवेसखीरहेविम
लमधुमाखी॥१॥ मुरलीमधुरस्यामसुखसुनिसुखसीचेश्र
वणद्वार॥ मधुरूपीस्वरूरहेंसुखअवधिदुछाईछार॥
२॥ मनकोंविरहतेंसकहांजानेंक्रतिमतितहिसुनावें॥ स
खसमअंगलीकुटिलजानतूजोगगुनगावें॥४॥ राग केदा
रो॥ इहेंसकोतिपरिआईऊधोंअनुदिनहीमनमेरे॥ जोकों
ऊबोलिकोरकेसेहूंफिरतनलोचनफेरें॥१॥ जादिनतेंजमु
मतिगृहआएमोहनजारें॥ तादिनतेंबारसपरसवि
नुश्रीरनकछूसुहाये॥२॥ कीडतहसनकृपाअवलोकनजुग
समानपलजाते॥ प्रेमतपतिसवहीअंगलहतेलोचननपे
नअघाते॥३॥ जागतसोवतसपननिसादिनसुंदरतनआ
निभावें॥ सूरदासताकमलनयनबिनुबातनिक्योंरहि
आवें॥४॥ राग कल्याण॥ ऊतरकतनदेतअलिनाच॥ पीषम
तेजसहितवेयबेलीबडीकमलकरसींचि॥१॥ मुरलीअ
धरसुधानिधिआननदेंपोषीदिनराति॥ श्रवणकामधा
मसासीकेसुरतिलेतिकिहिवाति॥२॥ सफकीस्यामकरीमा
ध्यवीरचिगुणकपटीसाज॥ सूरणकराखतहैंनातोंजग
तकहतब्रजराज॥४॥ राग कान्हरो॥ सबतेंअलिबहरेसनी
कों॥ जहांबसतगोपालहमारेतहांजायदुखहीकों॥१

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सुंदरवदनकमलमुरलीधुनिकनसुन्नसवरसुनायो॥ न
वनैयकौंमधुपमनतहांई बहुरिनहीघटआयो॥२॥जैसें
देहस्वासविनुतैसेंसवब्रजलागतफीकों॥कहिकौंहजनन
प्राणराखेंहमसूरसजीवनजीकों॥३॥राग नट॥ हूगोपालगो
कुलकेवासी॥एसीवातेंसुनिसुनिऊधोलोककरतहैंहांसी
१॥मणिमाणिकसिंधुसुधासुरपोषेसिंधुभएविखआसी
इमिहूंतिकेंसमाजरेंऔरनिआपुवाहिलईदासी॥२॥विस
र्यौंसूरविरहदुखअपनोंसुनतकालिऔरासी॥ज्योंवविहं
गगुपतिबिलोकिनिधि प्रगटन परकत फांसी॥३॥राग वि
लावल॥ज्ञानविनाकतहूकछुनाहि॥ निर्गुणतजिसगुण
कोंधावतिमुधोंकहोंकहिपाहि॥१॥तलभजेंतेनिकट
नधूरेंज्योंतनकेसंगछांहि॥ मुठवचनकहेंकारेकोंसुनें
हदेंसोदाहि॥२॥नैनगाननयनमेंमोहनिपुवारिऔरनाहि
लिखांहि॥सूरदासअवलागेकूवीकहेंकोगाहि॥४॥राग ध
नाश्री॥हमारेबालेबवनपरतीति॥एतौहमजाननतिनो
हीनतुमरेगाइकीरीति॥१॥सुंदरस्यामगाए मधुवनकोंक
हाकंसरिकुंजीति॥उनकीवातनिकोंनुपतीजेंभुसऊपर
कीभीति॥२॥सावनअवधिधारवारिहमसोंगएरिनवहु
नकवीति॥सूरदासप्रभुमिलहुकृपाकरिसुमिरिपुरातन
प्रीति॥३॥राग सारंग॥ बलिवोंवदलोंतेंजाहु॥ उनकोएकर
मारीकैतुमसवैंहियाआहु॥१॥तुमतोंहमहिनानिकेंभो
रीसोईसाजोंरू॥ हमरीवेरमुकरद्धेभागतहियेवेसुनोवा
उ॥२॥अवतुमससिविरितजेयमेंटहुउनकोंराहु॥सूरदा
सवोंहारभएतेंहमतुमएऊमाहु॥४॥राग सारंग॥राखोंजू
धरिजोमआयनोंऊधोपायपरें॥कहांरसरीतिकहांमन
साधनसुनिसुनिलाजमरें॥१॥चंदनछांडिविभूतिवनाव
तयादुखकोंनभरें॥सगुणरूपरह्योंउरअंतरनिर्गुण
कहांकरें॥२॥नासाधरिकपिज्ञानवतावतवेसरिकहांध
रें॥मुद्रानादसजेंतजिभूखनपातिव्रतनेंनरें॥३॥निस
दिनरसनारूपसग्राममगुणकहिकरिसुमिरें॥सूरदास
रहईमनमेंहमनाहूरिकोंविसरें॥४॥राग जैतश्री॥हरि
हरिदेख्यौंतेरोंज्ञान॥सुफलकसुतसवैंसुसंगलेंगयोंन

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू०सा० लैंन आयौ आली॥२॥ सुध्याकर तें अपलोक लावत करहु तय हे
२१२ मरेस दुरपका तिनहीहु जातिन वकहु ते वेन वलेस॥२॥ जोग
मति आति विसरद कीरति होंहि वंछित कांम॥ सदा तन नमय
तामई रहौं वेपुरुषत मभांम॥४॥ हम चरण कंज सु वास लेंलें
जीवति एसी रीति॥ कहति तिन सौं धूम घूंघटहि नचाहहु इहि
प्रीति ४॥ अजहु नाहि कहि कहि सिरानें या कथा कौ छोउ॥ स
रवोषोंतन कहौ मन देषि लीनों सोउ॥५॥ रा॰ सारंग॥ तुं जोक
हत हारि हूदें रहत हैं॥ कैसे होइ प्रतीति मधुप सुनि ए इत
नेरु सहतहैं॥१॥ वासर रैनि कठिन विरहा गिनि अंतर प्रान
दहतहैं॥ प्रजरि प्रजरि तनु निकसि धूम अरुनें नैन नीर वहू
तहैं॥२॥ कठिन अवज्ञा होत रैहु सुख मरजादें न गहत हैं
कहौ वचौ मन मानें सरुज इनि वातनि जैं कहतहैं॥३॥ रा
ग सारंग॥ गोपनि के वावरी जिनि होहु॥ तव [illegible] लैं एसी होइ रहौ
ज्यौं पार सपरसें लोहु॥१॥ मेरो कह्यौ [illegible] करि मानहु मोरे
सवनि कौ दोहु॥ तव लगि स [illegible] चौपरि जव लगि अ
ंतर मोहु॥२॥ रे मधुप वातनि [illegible] ऐसी वे पालकहि आवतु नो
हु॥ [illegible] सुष लुहि छांड़ि [illegible] भागी हम हि वता वतरवोहु॥३॥ रा
ग सारंग॥ एसी कव हु कहौ जिनि ऊधौ॥ कमल नयन की
कांनि करति न तुरत नीउत्तर सूधौ॥१॥ वात निहु एउ जाय पछौ
ज्यौं त्यौं हम माहि न कांची॥ मन क्रम वचन प्रसिद्ध कंनम
तकौ [illegible] रंग राची॥२॥ पा लागौं सोई पै कीजे मिरिह रह
कौ सूल॥ मुरली धरकौ आनि दिखावहु पहिरें पीत दुकूल
३॥ इनहीं वातन भए स्याम तन मिलव नहीं गति छोलि॥ स
वचन सुनि रह्यौ ठग्यौ सौ वहुरि न आयौ वोलि॥४॥ रा॰ सारंग
आलि तुम जाहु फिरि उहि देस॥ वीर कोस्विकरि होभगाहोंसि
खसी वलवलेस॥१॥ भाल लोचन चंद्र वम कत कठिन कं
ठहि सेस॥ नार मुद्रा विभूति भारी करौ रावलभेस॥२॥ जहां
जाय सेदेस कहियौ जटा धरौ सव केस॥ कौन कारन नाथ
छांडि मूरति हे आदेस॥३॥ रा॰ राग देवगंधार॥ जो पै रहे प्रीति की
वात॥ तौ ऊधौ तुम निकट रहत कौनि रषि सांवरे गात॥१
वंचन कहत भरि लेत नैंन जल सुरति करत अकुलात॥
जो घर घर हरि रहत निरंतर तौ कत हि मधुपुरी जात॥२

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सगुनप्रीतिरासीप्रतिपालनदुखिनहोनप्रतिगात। तुम
निर्गुणसोंप्रीतिकरतकैसेंसुमुक्तिपछितात ॥३॥ राग सो
रठ ॥ मुहहेरिकरिकीकोनमिताई जैसेंकूपनाहरीनमांगनोंला
लचलीनेकरतवडाई ॥१॥ प्रीतमसोंजोसहाएकरसनिसि
वासररहेंप्रेमसवाई ॥ चितमहआरकपटश्रंतरगातिज्यौं
फलखीरनीरचिकनाई ॥२॥ तववहवरीनंदनंदनअलि
वनवोलीरसरासविलाई ॥ अवयहकिनिकहूरिमधुपु
रीज्योंउडिकेंभवरवेलिविसराई ॥३॥ मुनिसंदेससुरपाती
लिखिकैंबोंवओसकननप्यासवुझाई ॥ सूरजदाससुदासभ
ईअवपाखंडप्रीतिउघरिनिजआई ॥४॥ राग केदारो ॥ जवलौं
ज्ञानहृदेनहिंआवें ॥ तवलगीकोटिजतनकरेंकोऊ विनु
वेरागनपावें ॥१॥ विनाविचारसवेंसपनोसोंमेरेमोसव
जोई ॥ नाम्नादारुमधअज्यौंपावकप्रगटसवनेंतेंहोई ॥२॥ तुम
हीकहतसकलघटव्यापकअरूसवहितेंन्यारे ॥ तखसि
खलोंतनुजेरतहेंनिसदिननिकसिकरसकिनिसीरे ॥३॥ सो
ववोलसवेंवोलतहेंमुखमेंमेलोंहुरसी ॥ सूरसुओषधि
हमहिंवतावतकफजुरधरगुरसी ॥४॥ राग केदारो ॥ वानेंहमे
हूतोंकहिजानत ॥ जोयेनेहरूनाहूतोंपुरातननोनानोंकत
मानत ॥१॥ मघवावाहिपालिपच्छवगिरि गिरिधारीजसुगा
यों ॥ दावानलअरिघाविनेव्रजतणावर्तगहिलायों ॥२॥ ए
गुनसवसुंदरमुरलीधुनिध्यांनहियेंतेखुलहिनि ॥ सूरस
धुपकोमायकमधुपुरीसुनहिंकुवरिसवदूलहिनि ॥३॥ राग के
दारो ॥ कोंजकहांकीनोंमधुराजाइ ॥ सखाजितिहारेधात्रुहनेंते
रहब्रजप्रगटेआइ ॥१॥ ससिसमकेसअग्रसआयुधलेउग्र
नअसुरसमान ॥ निसाअघासुरउदरज्वानिजियडुरनरह
तपलप्रांन ॥२॥ नवदावानलपांनकियोंअवगुनमंगामिलि
वलकीनों ॥ परिमलपवनेकपूरएकहोइ तपनिकरततन
तीनों ॥३॥ अवव्रजदासवासकरिमानतउरकुविजाजिनि
रूठे ॥ चलनवचनरिपुमारिआइहे सूरकहीदोउकूठे ॥४॥ रा
ग सारंग ॥ कहोंनिहारोंलागतकाहे ॥ कोटिकजतनकरहुजो
ऊधोंनाहिनवननितनिवाहे ॥१॥ काहेकोंअपनेजियभूलनकें
लिकिमनकीलाहे ॥ पहमनतोंअवहीभाजेंज्यौपयारकेगाहे
२ कासीकेलोगानिलेंसिखवहूजेसमुझतपवारे ॥ सूरदास

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. प्रभु गोकुल भीतर जी जन हैं मुख चाहे ॥३॥ राग ललित ॥ सोवति
२२३ राधा ललित खनि ललित खनि महि वचन कहत तकं जलताम ॥१॥ छि
ति पर कमल कमल पर कदली कदली पंकज कियो प्रकास
ता पर अलि सारंग सारंगपति सारंग रिपु कियो लै बास ॥२॥ त
ह अरि पंथ पिता सुर तउ अरि ते बासि जवि बिंब सराभव आभास ॥
सारंग सुख तें पर न अंबु ले मानहु शिव पूजति तपति बिना
स ॥ सूरदास प्रभु बिनु हरि हरि रिपु रहु ते आपा छिवावत त्रास
॥३॥ राग धनाश्री ॥ भयो अलि नेह निरंतर भारी ॥ छांड्यो भोग जो
ग ब्रजभीतर स्याम मिलन ब्रत धारी ॥१॥ नैनकमल पूतरी ह
पार पीनी रस जल लासि रलांण ॥ परी बिरह पर नाम श्रवनि कों
उठि गई हरि आए ॥२॥ सुने सखी नैंम ईलागन सब गुण भेष
बनाए ॥ निती सुनति मधुबन की बातें सरद रितु बगाए ॥३॥
राग मारू ॥ हमतौं सब वनि मांहि तब छांड्यो ॥ कागत अकासु नहु अ
लि तेरी जेपाव सु बिनु षांड्यो ॥१॥ का ज [illegible] जरति पावक सम
बूफति चले जल धार ॥ निमित तमतौ के पलक नहि लागत गन
त ब यौं नहिं तार ॥२॥ कोकिल कुंज बंज मधुकर धुनि घनबो
लत डरडारे ॥ सूरहि तं बहु तनि किपै हूं आपहि तब कहु काये ॥४॥ रा
ग केदारौ ॥ सुनत आलि री मुख बातौं ॥ कमलनयन की कपट
कहांनी ह्यैय क आपौं तन तातौं ॥१॥ कान्ह ब्रजराज का मन गोकुलके
सबैं कियो सहि नातौं ॥ अब नाहि निमिष वियोग सहत ज्यों क
रत कां [illegible] सि रहें तौं ॥२॥ मधुबन नायक कान्ह कुबिजो संग मति भू
ली सुधि मानौं ॥ तिहि गजन मूप निमि खन हि बिछुरत सर कांम
मर मांतौं ॥३॥ राग सारंग ॥ बोल एक इन हूं कौ सुनि लीजें ॥ कैसी
उठनि उठें धों ऊधों तैसो ऊतर कीजें ॥१॥ पामें कछु अनुचित नाहि
अपनो मतौ न दीजें ॥ सुनि री सखी भांनियों बिह डर चलौं जाय
मुख छीजें ॥२॥ हैं कर जोरि भई सब ठाढी सोई कहो जिहि जीजें ॥ सू
रदास सोई मत रें जिहि बदन सुधा रस पीजें ॥३॥ राग सोरठि ॥ तु
हमिष कुल सु कहिके सं आवें ॥ जैसैं मूक मिठाई कौ सुख अं
तर अंतर भावें ॥१॥ परम स्वाद सब ही तें न्यारो अमित तनो षस प
जावें ॥ मन बाणी गुण कर्म अगोचर सोई जानें जो पावें ॥२॥ बि
ना रूप गुण नाम जुगति बिनु निरालंब कित धावें ॥ भजेंनवी
न तनहीतें सूरज सगुन लीन मन गावें ॥३॥ राग केदारौ ॥ नोपे अ
लि मधुराले जाह ॥ आपनि हार दुअवं लोचन की मेंट हु उर

कोंद्वारु ॥ १ ॥ बुधि बल बचन जहां जवाहु गहि हि विरह सिंधु अवगा
हु ॥ पपल गाम्ब हूं मधुपुरी के नर चंद तजौं जनराहू ॥ २ ॥ देखि जा
य हूप कुविजा कों सहित सबनति यह द्वारु ॥ जीवन जनम सुफ
लकी लै बहि हूरजन्म उछाहु ॥ ३ ॥ रा ॥ सा ॥ ग ॥ आरिन तें गोपा
ल चले तारिन तें ऊधो पाच्र जे कें सबें सुभाउ वरले ॥ १ ॥ घरे अ
हार विहार हरख हीन सुख सोभाग गुण गान ॥ ओजन जस बर
हित सकल विधि आरति अगम समान ॥ २ ॥ बाढी निसा बल
रूप आभूषन उर कंचुकी उसास ॥ नेनंनि निल अंजन अंबल अ
ति अवा अवधि की आस ॥ ३ ॥ अब यह रस अंग रयात नकी
कहि बीजाय सुनाइ ॥ सूरश्याम प्रभु मो सों कीनी जिहि वेगि मि
लहि अब आइ ॥ ४ ॥ रा ॥ आ ॥ वरी ॥ सबों दिन एकें से न हि होने त
व अलि समसि सी रहें अब नातो भयो विरह जनि मो ते ॥ १ ॥ कोरिष
ट मास रुसन निसि अंग नर एको निमिष न जानि पो ॥ अब के अंग
ति भई कान्ह बिनु पल बीतत जुग मान्यो ॥ २ ॥ सिहि मत जोग जुग
ति सा सास्त्र ति ते अलि कहे घनेरे ॥ अब ताहि ओर सुहाय सूर
गुण सुमिरि स्याम संग केरे ॥ ३ ॥ रा ॥ धनाश्री ॥ कोउ गवा पसों
पहौं रूप हीन कुल हीन कूबरी ता सों मन जु दयौ ॥ १ ॥ उन कों
मद सुभाव सलिल कों खोलि निखां उकहौ ॥ सकुचौं नही ।
जोनि ऊधो तनु उमगि न सनप सयो ॥ २ ॥ फेरि फिरत अ सुरसा
सवि के जनु जइ मार धयौ ॥ सूरदास गोपाल रसिक मिलि अब
लन करम कह्यौ ॥ ३ ॥ कुविजा संदेस ॥ रा ॥ सो ॥ ठि ॥ मो पर काहे कों
रुकति ब्रजनारी ॥ काहू के भाग सों सा कों नाहिन हरि की कृपा
नियारी ॥ १ ॥ फलनि मांझ जैसे कर ईतं बरी रहति जु घूरे उपरी
जब वे हाथ परी गुनिजन के बाजत राग रसारी ॥ २ ॥ यह संदे
स कुविजा कहि पठयो अरु कीनी मनुहारी ॥ नव टेढी सबको
उ ज्ञानत परसें भई अधिकारी ॥ सूरस्याम करुणाकर स्वामी
अपने हाथ पनवारी ॥ ३ ॥ गोपी वचन ॥ रा ॥ सा ॥ ग ॥ कहां भयें म
धुरा हि गए ॥ अब हूं ऐ अलि के से सुख पावत नंनंद कें भांति भए
॥ इहां अटक मन प्रेम पुरातन नौतन नेह नए ॥ उहां धरत नृ
प भेष रहिन हि रति इहां कर मुरली लए ॥ २ ॥ कहां हुतें कर पठयो
अक्रूर के बहु ठग ठाठ ठए ॥ अब कौ कान्ह रहत बिन मोल कुललो
गनि के सिखए ॥ ३ ॥ राजा राज करो अपने गृह माथे छत्र दए

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. चिरजीवहुयहौसूरकन्हैयाजीजतमुखचितए॥४॥ ॥सारंग
२२५ यहसंदेसकहैंजोऊधौंकहौकौनपैपाए॥कोयिनहैंअनु
मानएकमनयहुमिसहौयहांआए॥१॥हरिजूप्रथमनंदज
सुमतिगहूनानालाडलडाए॥उरउतसंगकन्हैयालेलेंमाख
नखांनसिखाए॥२॥सुबलसुदामाकेसंगसखब्रजवीथिनिवी
थिनिधाए॥कछुएकजामभएखेलननंदबबोनंदनंदनपठए
३॥बेंनमधुरधुनिबोलतथेईथेईसंगनिनांचनचाए॥जल
थलनितनोजनलीलाकेंकेतेजुगविरमाए॥४॥यहविधि
विविधिकुतूहलछिनुछिनुकरतेंआपनेभाए॥कबवलेम
धुवनकबमारोंरिपुबचनअरुबंभजनाए॥५॥पाछेरहेसुन
तमोहनौनियउरुकिउरस्थलनलाए॥सूरदासप्रभुकृतनव
जियासखियनसुपनचताए॥६॥राग॥सारंग॥ऊधौंआवनहा
रभए॥अंचलउडतआधिकमनआनंदहारकनतेंनखए॥१॥
भईप्रतीतिआएसुनेजियनेंसबनिसिसपनउसानहुनचबसे
तकेआमासआगएनयातनए॥२॥सोविचारिजीयअंतरमति
चितवतनिकरभए॥सूरसंगअंतरतेनिकसिकेंसबसुख
हसिपुजए॥३॥राग॥सारंग॥कोरिकिरिकहांसिखावतबात॥ग्रा
नकाजउठिरखितिऊधौघरघरमांखनखात॥१॥जिनिकीबा
तकहतनुमहमसोंसोहैंहुमतेदूरि॥इहांहैंनिकटजसोदा
नंदनप्राणजीवनीमूरि॥२॥बालकसंगलियेंदधिचोरनखा
तखवावतडोलत॥सूरसीसनीचोंकतनावतअबकोनां
हिनबोलत॥३॥राग॥सारंग॥जोकरिक्रपापाउधारेंब्रजमेंतों
कछुतुमहिंसिखावें॥मौनधरिजोबेठिरहौंछिनुमुरलीस
वदसुनावें॥१॥अबहिंसिधारेवनगोचारनहमबेंठीजसुगा
वें॥निसिआगामश्रीस्यामाकेसंगनांचनअरुसवनावें॥२॥को
जानेंसंकोचहिआनेंतुमडरनिसिपेंनआवें॥तबदुखदेंरव
देंअतिदारुनसखियनप्राणछिडावें॥३॥नकरौपेंनेंहलालइहां
पेंजोकोउकोटिसिखावें॥सूरदासयहसुनिऊधौमनकौंहून
मधुराधावें॥४॥राग॥नट॥बातनकौंब्रजनाथमिलनकौंबिस
रतहैंअलिनेहू॥बंसनिनादस्वादरसलंपटमानतनहिंप्रति
एहू॥१॥कौमातुलेंबधकौंनमधुपुरीकोपतिपरजनगेह॥को
ऊधौंकोयोगनिनिहपेंनबकिप्रोरलिनुरबेंहु॥कोटिनतनसु

Shrimad Gokulnathji Maharaj

गवोवनवेलीवंनसींचेवनमेह॥ हीराहीरचीरसोधामिलिनी
रविनासबदेह॥३॥ कुंभजकुंभसमानज्ञानपयविनगुनपानि
पवेह॥ सूरस्यामरससहूपमाधुरीरसिकनिकोंअवलेह॥४॥ रा
ग॥ धनाश्री॥ हमतोंभमिहूंनंदाकेशोरना॥ जोगाकुलरिलेंजाय
ऊधोंजहांवसेंचितकेचोरना॥१॥ नीयाहीजोगमिलाइएहमया
योगअपोग॥ ऊधोंतिनलेंहीमियेंअलिजहाहैंनित्यसंजोग
॥२॥ पूरनपूरनवहहतहोंउहांपूरनइहांकोन॥ ऊधोंकहांतुमरे
नहोंअलिराधेऊपरलोंन॥३॥ मिलनभांतिबहुविधिहैंयासि
लिवेकोंहेत॥ सूरदासप्रभुअवधिवरीहैंमिलिहैंजहांकुरु
खेत॥४॥ जसोदाजीकेवचन॥ रा॥ सारंग॥ ऊधोंएसीहमाहिन
जांनी॥ सुनकेहेतुमरमनाहिपायो प्रगटसारंगपांनी॥१॥ निसि
वासरछतियालेंलाउंबालकलीलागाउं॥ एसेभागहुफिरि
फिरिदैहैमोहनगोरसकिलउं॥२॥ नाकारनमुनिध्यानधरोंसि
वअंगविभूतिलगावें॥ सोबालकलीलाधरिगोकुलऊख
लसोंपयवधावें॥३॥ विहरतनहिंव्रजकीछतियांहरिवियोग
कीमहिमें॥ सूरदासव्रजजनंदनंदनरहकेतुकहांकोनविधिरहि
यें॥४॥ उद्धवप्रभुप्रति॥ रा॥ सारंग॥ नवहोंइहांहीतेंगयो॥ नवव्र
जराजसहितसबगोपिनछोड़ेंजुलयो॥१॥ उनतेंजायनंद
बाबाकेंसबहिनसोंधूलयों॥ सांचीकहोंमेरीसोंऊधोंमेया
कहांकह्यों॥ बारबारकुशलातपूछीलेंलेंतुम्हारोनाम॥ मन
धकधकीनिषातनकलोंकृष्णकृष्णबलिराम॥२॥ सुंदरप
रमविचित्रसुरामितइहमुरलीरंघाली॥ लईउठायसिरना
यसूरप्रभुप्रीतिआनिउरसाली॥४॥ रा॥ सो॥ ठि॥ माधोंमेंजोग
कोंबोजवह्यो॥ श्यांमाविधुमुखवचनसुधारससुनिसुनिक
छूनकह्यो॥१॥ सकलसिंगारसारसर्वसुव्रजजनवनीतलह्यो
बूछोंभांडव्रह्मांडलोकहितपीवनरह्योंमह्यो॥२॥ नवनवभा
वतुरंगमहोदधिव्रजघरघरदुमह्यो॥ हमजेवपपोज्ञानको
मारगपाइनिजानरह्यो॥३॥ मोहिअचरजुएपेंलागतुतुमके
मेंजानसह्यो॥ सूरस्यामसुनिमरवासयानोलेंभुजबीचगह्यो
॥४॥ रा॥ सो॥ ठि॥ माधोजूमेंउतअतिसचुपायो॥ अपनेंजानिसंदे
सव्याजकरिव्रजजनमिलनपठायो॥१॥ छमाकरोंनोंकरोंभी
नतीजोउतहोंदेषिआयो॥ श्रीमुखज्ञानपंथजेउबह्योंतापेंक

Shrimad Gokulnathji Maharaj

मु.सा. धुनसुहायो ॥२॥ सकलनिगम सिद्धांतजनमश्रमसफलभासह
२७५ जमुनायो ॥ नहिं श्रांति सेसमहेसप्रजापतिजे रसगोपिनिगा
यो ॥३॥ कहुकथा लागीमोहिमेरीउ हिरससिंधुलायो ॥ उत
तुम देखें औरभांतिमें सकल नपाहिंतुकायो ॥४॥ तुम्हारी अक
पा कथातुमजानोहमहें जनेंनाहिं बसायो ॥ सूरदास सुंदरप
दनिं राखत नें ननिनीरबहायो ॥५॥ राग केदारो ॥ कहांलनवनेंत्र
जकीरीति ॥ कहांमम सरकोंपठायो देखिउनकी प्रीति ॥१॥ जु
वति वल्लभकहां वतहें करत सकलअनीति ॥ मोहितोपह
कठिन लागत औरवेगोपरतीति ॥२॥ सुनहुतो देखोनअपनो
लोक लोकनिकीरीति ॥ सूरप्रभुअपनीसचाईरहीनिगमन
जीति ॥३॥ राग केदारो ॥ जोतुमकरुणाके आलें ॥ तोंकत होतक
ठोरमननिमाहिं वहुतदुखसालें ॥१॥ वहेंविरहकी लाजरीन
प्रीतिकरि सुहृ मुग्धव्रज देखो ॥ मोसो बातकहीकिमिमनमुख
कहां अवनिकों लेखो ॥२॥ निगमकह्यो वसहोत भगतके
सोई उनहें कीनी ॥ सूरस्वाम छांडि हिं ब्रजजल अखियांभ
रिलीनी ॥३॥ राग केदारो ॥ मेंजान्योहिं उधिकोंभयो ॥ पठ्योजुउन
के प्रेमकों समें तुम प्रभुबिसरिगयो ॥१॥ तुममोंसपथकरि
गयोंमाधोवेंगिकह्योहि आवन ॥ देखनहीवेसोहौंकेगयो
लग्योउन्हेंमिलिगोवन ॥२॥ समुझिषटमासस्यामवितीतेक
हांहु तोकहांयो ॥ सूरश्रवन कहीरंगोपिनसों श्रवणामूर
छिधायो ॥३॥ राग केदारो ॥ सुनिलीनोउनहीकोंकह्यों ॥ अपनी
चालि जांनिमनहीमनगुनिअरगायरह्यो ॥१॥ वेहीपोंजहें
कताहि पठायोसठवांवरो अयानो ॥ तुमहुबहुतनकूरोबान
निकों उहांजाउतोजानो ॥२॥ अबलनिसोकहिपारतनाहिन
बाततोरिकरिकांनि ॥ अनबोलें पूरोरहेंलीन्हें बहुतदिननं
कीजांनि ॥३॥ आज्ञाभंगहोइ केजोमापें गयोंतुसारेढीले ॥ सू
रपठावनिकी वृद्धीरह्योंजु गजसोलीले ॥४॥ राग केदारो ॥ में
हठि हों सागुरेंह्यारों ॥ आज्ञाभंगुहोइकेजोमोपेंवचनतुसारों
पारों ॥१॥ हरिमानिउठिचल्यो दीनकें जानिअपनपोकेंद
समुझिलेहु तुमरतनेहीमें कहांकरेनि मनिकोंवेद ॥२॥ उस
रकोंऊतरनहिं आवततवेंउनहूंमिलिजात ॥ तुम्हारीबितीबा
तब्रसाकों अर्द्धवचमेंमात ॥३॥ अपनीचालिजांनिमनहीमन

Shrimad Gokulnathji Maharaj

चल्यौ चसी कीतौरि ॥ सूर एक हूं अंग न कांची में देखी टकटोरि
॥४॥ राग केदारौ ॥ सब ब्रज घर घर एकै रीति ॥ ज्यौं कुरुखेत गये
धनवारे त्यौं प्रभु तुम तन प्रीति ॥१॥ वेसव परम विचित्र सयांनी
अरु सब ही जग की नीति ॥ मेरे वचन सुनत ठई सब ज्यौं बाहु की
भीति ॥२॥ एकै गहन गही इन हृदै मैं टिवे रंक की नीति ॥ गोप
भेष भजि सूर स्याम वोर ही विश्व वस्य जीति ॥३॥ राग केदारौ ॥ सुनहु
स्याम सुजान त्रिया गज गामिनि की पीर ॥ विरह सरोग अधीर ग्रा
हक कौं मग्र सी अधीर ॥१॥ सोक पंक मनीम सु दृष्टि मो चिनें न
निनीर ॥ कांति सम द्विन रैनि विरह बल विकल भई सरीर ॥२
चक्र लै करि वेगि धावत हू कृपा कै बलवीर ॥ काटि द्रुखर समू
ह बंधनि कढि आनहु तीर ॥३॥ कहां लौं निछुड़ाय ली नौं छिर
दरीन दयाल ॥ सूर प्रभु न विसारियें जू राधिका सी बालि ॥४
राग सारंग ॥ सुनहु स्यांम नेम सब ब्रज बनिता विरह तुम्हारे भई
बावरी ॥ नाहिं न नाथ और कछु भावें छाँडें करकंप रावरी
॥१॥ कबहु कहत हरि मांषन खावे कौंन समै हो इहि गांवरी
कबहु कहति धरि बांधौ ऊखलु घर घर तेले चली रांवरी
॥२॥ कबहु कहति ब्रजनाथ सा [illegible] वंद भयो [illegible] हिं ठांवरी ॥ सूर
दास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु [illegible] मूरति सुभग सांवरी ॥३॥ राग
केदारौ ॥ सुनियें ब्रज की [illegible] तनु साई ॥ रुप्प की धुजा पीत पट भू
खन देख तही उठि धाई ॥१॥ जे बातें तुम कही जोग की ते में सबै
सुनाई ॥ नैन मूरि [illegible] कर्म तुम्हारे प्रेम मगन कें गाई ॥२॥ बाल्हा
रसं देस जन मौरी [illegible] क छति द्वार लगि आई ॥ सूरदास प्रभु वन वि
नोद करि जे तुम गाय चराई ॥३॥ राग केदारौ ॥ कान्ह तुम्हारी वि
कल विरहिनी विलपति विरह वियोग ॥ अंति आरन तन म
सारति तन मन इक टक करै मगु जोग ॥१॥ कज्जर मिलि लोच
न जल वरखत दृखि न सुखद छ विरोग ॥ राहु केतु समि मिलि
मधु अंक छुड़ावत छोग ॥२॥ अब लाकहुं जो गुम तु जानें म
न म प्य विप्या विलोग ॥ स्याम कौं नीर चुवत हैं नील वसन
निचोर ॥३॥ राग केदारौ ॥ ब्रजजन दृखिन नन अति छीन ॥ रटन
इक टक जागत वाछिक प्रणाम तनेन घन लीन ॥१॥ योंस कायति
सकल मिलि करि कपिल गुण व लवीर ॥ रैनि उड़पति निरति
तलफ ति मीन ज्यौं जल जी र ॥२॥ कहन जो तुम कहे मो सों यवि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा॰ रह्यौ कहि उपदेस॥ चिकन पट नलचूं स्यौं ढरी वचन उरन
२६ प्रवेस॥३॥ वरहु हमु कर मुरली अधर पट पीत उर वनमाल र
ही वह छवि अंग अंग ज्यौं नत ताल पटनि आल॥४॥ करहु कृपा
अनाथ वंधव कहिऊ धो जाइ सूर प्रभु अब कें र सुरें मरत
लेहु जिवाइ॥५॥ राग वेरारो॥ हरि हु सुनहु वचन सुजांन॥ ऊधौ
कहत संदेस व्रज कौ सखा संत निदांन॥१॥ विरह व्याकुल दी
नतन मन हीन लोचन कांन॥ मैं सकल व्रज री न देख्यौं ज्यौं वि
ना तन प्रांन॥२॥ तुम विना सोभा नहीं ज्यौं वासरें विनु भांन॥ आ
स व्वास उसास घट मैं अवधि आसा मांन॥ तुम जगत जीवन
ज्यात पालक जगन्नाथ कृपाल॥ करहु जतन कें सूर के अ
भु ज्यौं लियौ कहि व्रजबाल॥६॥ राग मारू॥ धर्म अभिमान वह्यौं न
मनितें न लह्यौ भजन प्रकार॥ कौन काज जनम लैं कुलमें वडाई
कीनों भुव कौं भार॥१॥ केलि कथा कुल कौं केलवैनी व्रज वि
या न खसि खचार॥ तहां कीनी प्रीति जौं ध वा तुरी देखि विवि
त्र विहार॥२॥ स्याम पधरी हरि स जेन वेर की कह्यौं न गाव्र
सि धार॥ नौं हि कुकर्म मर्म अव वर तन सुमिरि सप सकुमार॥३॥
मुनि अैसी मति करौ अभिमान तनु विरच्यौं नाथ उदार॥ फेरौं वि
गाम ह्यौं वान लसूरज जै नहिं आस अधार॥४॥ राग सारंग॥ कोऊ
सुनत न वात हमारी॥ कहां मत जो मजुगति सारवा अैनि प्रग
ट प्रेम व्रज नारी॥१॥ कोउक हति गलों चारन कोउ धेनु दुहि रे
त॥ कोउक निडुवर खान कि गोवर्द्धन कर लेत॥२॥ कोउक
हति नाग काली मुनि गए जमुना के तीर॥ कोउक हति अघा
सुर मारत लये संग वलवीर॥३॥ कोऊ कहति ग्वाल संग खेल
त वनमें जाइ लुकांने॥ सूर सुमिरि गुण नाथ त्ति हारे कोऊक
ह्यौं न मांने॥४॥ राग मारू॥ सिन हया घोष चलहु गोपाल॥ गा
इनि की आस सेर मिटावहु भेटहु भुज भरि ग्वाल॥१॥ नांचत न
ही मोर वारि दिनते बोलत वरषा काल॥ मृग दूवरें दरसनु सु
रि सुनन नवें नु रसाल॥२॥ वृंदावन भांवतों नु मारों देखहु स्या
म तमाल॥ सूरस्यांम मेया जसुमति कों फिरि आवहु नंदलाल
॥३॥ राग सारंग॥ अव गति पंगु भयो मन मेरो॥ आयो यहां निर्गु
ण वाहि वे कों भयों सगुण को चेरो॥१॥ अति अग्यान कहत कहि
आयौ दूत भयौ उहि केरो॥ निज जन जानि जतननें तिनसौं कीनौ

Shrimad Gokulnathji Maharaj

नेह घनेरौ ॥ ३ ॥ मैं कछु कहे ज्ञान गाथा तें नैं कन परसति नेरौ
सूरमधुप उठि चल्यौ मधुपुरी बेगि जोग कौ बेरौ ॥ ४ ॥ रा ॥ मारू
मैं समुझाई बहुत अपनो सो ॥ तऊ फिउन परती तिनउ पजी ल
ग्यो सबनि सपनो सो ॥ १ ॥ कही तुम्हारी सबै सुनाई प्रेम सहि
त वे कोपी ॥ सुफलक सुत कौं कह्यौ मानि हैं अरनि करति
सब गोपी ॥ २ ॥ जानि बूझि करि हौं कत पठयौ सठ वा वर सें अ
पनौ ॥ तुम हूं बहुत बोफ वातनि कौं उहां जाउ तौं जानौं ॥ ३ ॥ इत
नी सुनत कमल दल लोचन गहि कर सों कर लीनौं ॥ प्रीति स
हित मुसिकाय सूर प्रभु तरकजा निहूं सि दीनौं ॥ ४ ॥ रा ॥ मारू
विनती एक सुनहु घनस्याम ॥ चलन न नैरति चल्यौ न हिभा
वत चलत न कह्यौ आवन घर जो राम ॥ १ ॥ तुम सर्वज्ञ सब हि के
व्यापक जीवन पर जन के बिश्राम ॥ संतत रहत [illegible]
हियन हूं सेवक सुखधांम ॥ २ ॥ बहुत सरीति प्रीति गोपिन
की लये रहो जिलीला गुण नाम ॥ सूरदास प्रभु सब सुख ता
तें उनो निस रैंगु ल स्याम ॥ ४ ॥ रा ॥ सोरठि ॥ तुम्हारी भांवती कह्यौ
यह व कहियो नंदनंदन आगें प्रीति सुरस हुसह्यौ ॥ १ ॥ लेति
उसास सखी बिनि सा दिन के नैं कन सो पर ह्यौ ॥ बिगलित केस
बदन छवि एसे जनु ससि राहु गह्यौ ॥ २ ॥ माखन का ढिकू वरी
लीनौं व्रज में रह्यौ मह्यौ ॥ सूर स्याम रति जन म प्रेम पै बहु रौं
जम्यौ रह्यौ ॥ ३ ॥ रा ॥ मारू ॥ ब्रज में संभ्रम मोहि भयौ ॥ तुम्हारे
ज्ञान संदेसौ प्रभु सबै जु भूलि गयौ ॥ १ ॥ तुम ही सौं किशोर
बालक बपु में घर घर प्रति देख्यौ ॥ मुरलीधर घनस्याम मनो
हर अद्भुत नटवर पेख्यौ ॥ २ ॥ कौतुक रूप ग्वाल संदन में गाय
चरावन जात ॥ सांझ प्रभात हि गोरे हूं न मिस चोरी माखन
खात ॥ ३ ॥ नंदनंदन जु बाल लीला करि गोपिनि चित चुराव
त ॥ छनन नैन निर्नै अस निहूं पो देख्यौ हूं नहि भावत ॥ ४ ॥ कालि
रूपाउन रास न दीनौं मैं पोवहि जोग बह्यौ ॥ छिन मांन हू
षट मास सूर प्रभु देखत भूलि रह्यौ ॥ ५ ॥ रा ॥ सारंग ॥ ब्रज में
एक अचंभौ देख्यौ ॥ मोरमुकट पीतांबर धारें तुम गाइनि
संग पेख्यौ ॥ १ ॥ गोपबाल संग धावत तुम्हारे तुम घर घर प्र
ति जात ॥ दूध दह्यौ मह्यौ लै ढेरत चोरी माखन खात ॥ गोपी
सब मिलि पकरति तुम कौं तुम छुडाय कपि भागत ॥ सूर
स्याम नित प्रति यह लीला देखि देखि मन लागत ॥ ३ ॥ रा ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा॰ राग कली ॥ इहां कछु नाहिंन नेह नयौ ॥ मधुप मांझ मोंसों जु इहां ब
२११ ज विधि ते पहिलें भयौ ॥१॥ बीज मेंन माली मदनमनु आलबा
ल बयौं ॥ प्रेम पैसी चौप हिलहीं रूप रति बल रयों ॥२॥ इते अ
मजन स्यांम सुंदर विरखा विमल बयौं ॥ निरखत स्यांम सुंद
र मनमोहन बिन प्रांन रहत कैसें ॥३॥ कंवलनजी तनर
चत नाहिं आवकौ आमोद ॥ सूरजीवन वचन परसत वि
न गोपाल विनोद ॥४॥ राग विहागरौ ॥ लोंगनि ढोर माई स्याम
धुवन के लोग ॥ वेगि पठइदे स्यांम कों अब ब्रज विरह
वियोग ॥१॥ हम जानत तुम ऐसी करोगे प्रीति कहि कैं धों
जोग ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कुं कब मिलेंगो यह सं
जोग ॥२॥ राग परज ॥ पियरी स्यांम वियोग मधुकर रे ॥ स्यांम
सुंदर मधुवन कों सिधारे अंत वरा उ लोग मधुकर रे ॥१॥
एक दिन हरि हम कौ डाकरते अब लिखि पठए जोग ॥ वि
छुरन भए मिलन कब होइहैं कि [illegible] बहु लोग ॥
सूरदास प्रभु तुम रे दरस कौं तजौंनों व संजोग ॥२॥ राग न
ट ॥ ऊधो कब आय है नंदलाल ॥ हेरत पंथ बहुत दिन बीते
सब ब्रज बाल विहाल ॥१॥ घेरि लियों बहु औरनें प्रेम व
स पूछत ग्वालिनी भाल ॥ सूरदास प्रभु तुम रे मिलन कुं
कोरि करि है प्रतिपाल ॥२॥ राग परज ॥ सुनि लीजो नाथ प्र
देस वा ब्रजवासी न ऐसी कही ॥ बालापन कौ नेह छांडि के
कबि कुविजा सें प्रीति नहीं ॥१॥ नित उठि रारि करत हरि हम
सों जब हम वेचन जात दही ॥ अब तो बीच परयों वरषन
कों यह आखिया देखि विलोकि रही ॥२॥ अब सुनियत मह
राज भये हैं उठत कंचन कोट महीं ॥ वे दिन बिसरि गए सु
निऊधो घर घर मांगत जांम मही ॥३॥ वे तो हैं तो निलोक
के ठाकुर ब्रज जुवतिन थिर पेच रही ॥ सूरस्याम दुख का
सों कहियें औघ की प्रीति कों लोनि वही ॥४॥ राग धनाश्री
के सें धीरज धरहूं ऊधो तुम जो गति खावन आए ॥ एक स
में हरि अपने करनकरन फूल पहराए ॥१॥ ता कारन मा
री के मुद्रा मधुकर ह्वा पठाए ॥ वहै वेर हं दावन कुंज
न सिरयें के सस वासे ॥२॥ यह अपरस मेंली मृगछाला अ
सहान दरसाए ॥ बिन देखें कलन परत न एक पल सांव
रे ह्वा पविकाए ॥३॥ राग धनाश्री ॥ जो जा रे मधुकर दूरि दूर रं

गरूपएक ही मूरति मेरो मन विंध्यो चूर चूर ॥१॥ जब लगा गारज
तब लगानि कैंटहै काज मेरे पैं रहै धूर ॥ सूरस्याम अपने गरज
को कालि यानि रसलें घूर घूर ॥२॥ रा धनाश्री ॥ जब तें सुंदर बद
ननिहारे ॥ ता दिन तें मधुकर मन अटक्यौ बहुत करी निक
रैं न निकारे ॥१॥ मात पिता पति बंधु सजन जनि न न हुं कोक
हिबो सिधारो ॥ हरिन लोक लाज मुख बालि रखन हुं सह क्रोध पी
को करिडारो ॥२॥ हैं बो होइ सु होय कर्म बस अब जी को सब
सोच निवारो ॥ दासी भई दाम सूर प्रभु भलो पोच अपनों न
विचारो ॥३॥ रा प र ज ॥ नैं ना मेरे नैंन नि माऊ समाने ॥ टारे टर
त एक रस मधुकर प्रेम प्रीति अरुझाने ॥१॥ मन बुधि पाछि
त भई सब उन की अनेक जतन न बहुरानें ॥ बीधे फंद विहंग बा
पुरनें सब भग है विरानें ॥२॥ मन बच क्रम पल एक ... के अंत
र गुण बहु होत सयाने ॥ सब हारि लाल सूर प्रभु सम कारि जि
हि बीते सांजाने ॥३॥ रा प र ज ॥ ब्रजजन न सकल सा मबत धारी
बिन गोपाल और नहिं भावत तैं काहय बिभिचारी ॥१॥ जोग
मोट सिर बोझ आनि तुम कत धोर घोष उतारी ॥ इतनी करि दूरि
जाहु अलि कासी जहां बिकात हैं प्यारी ॥२॥ यह संदेस सुनि
लियो तुम्हारो अति मंडली ... अनन्य हमारी ॥ ज्यौ रसरीति करी
हरि हम सौं सो क्यौं जात बिसारी ॥३॥ महा मुनि कोउ नाहिं बांछैं
जदपि पदारथ च्यारी ॥ सूरदास स्वामी मनमोहन मूरति की
बलिहारी ॥४॥ रा प र ज ॥ यह बात हमारे कों न सुनें ॥ जिनि या
हीं हरि रूप सु ... करि भूलि आरानि कौ न चुनें ॥१॥ इहां सेव
न को ठोर न देखत ताते सुनि मन में गुनें ॥ के सुकवि रहवया
र पौन की बैठे छाने को धुनें ॥२॥ तब उन भांति न लाड लडाय अ
ब बूझि ये न यह है उनें ॥ बालि छांडि के सूर हमारे अब कनरवाई
को लुनें ॥३॥ रा प र ज ॥ ऊधो मूर्ध्येनें कुनि हारो ॥ हम अबलनि
कों सिखवन आए सुनो सयानन ति हारो ॥१॥ निरगुण कह्यौं
कहां कहियत हैं तुम निर्गुण अति भारी ॥ सेवित सगुन स्या
म सुंदर को मुक्ति लई हम च्यारी ॥२॥ हम सालोक्य स्वरूप सरो
ज्या रहत समीप सहाई ॥ सो तजि कहत और की और तुम
अलि बडे अदाई ॥३॥ हम मूरख तुम बडे चतुर हो बहुत कहां
कहियें ॥ चेहि काज भेख करत अब मारग गाहियें ॥४॥ अहो अ
ग्यान ज्ञान ... पर प्रान ज्ञान रूप यह माहिं ॥ निसदिन ध्यान सूर

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. प्रभुकों आलि देखनें जितानि नहिं ॥३॥ राग परज ॥ कहां रसबसि
२२८ आई की प्रीति ॥ जौं न गडै उर अंतर ऊधो भुसऊपर की भीति
॥ नैंन नवैंन अरु हृदौं मिलन नसब बाटत प्रेम प्रतीति ॥ एहे क
हूं सहोत जरस सुखलेनि नहीं मन जीति ॥२॥ ऊधो यह हैं संदे
सों कहियो मधुबनके सीरीति ॥ सूरदास सोई जन जांनें गई
है निनहीं मैं बीति ॥४॥ राग परज ॥ मधुकर कहिवे मन गानें
जिनके एक अनन्य ब्रत सूझे क्यों दूजे उर आनें ॥१॥ यह तौ पो
गखार आलि ऐसो या बिया रवरि मानें ॥ केऊधो यह बानप
तिब्रता सुनिषद पुरुष विरानें ॥२॥ जैसें मृग आनि ताकी विधि
कदृगा करकों दै गाहि जानें ॥ हिंसा करि पोख नतन मन सुख
छि रस अपराधन जानें ॥३॥ बडें विचित्र कुबिजाके रंग रंगे हम
निर्गुण लषि ठांने ॥ सूरस्याम सगुन रति मांनें धूप आनजि
नि छानें ॥४॥ राग परज ॥ ऊधो काहे कुं भगत कहावत ॥ जो पें जो
ग लिखि पठयो हम कों तुम हूं न भस्म चढावत ॥१॥ सिंगी मुद्रा
भस्म अधारी हम ही कौं कहा सिखावत ॥ कुबिजा अधिक
स्याम की प्यारी ताहि नहीं पहिरावत ॥२॥ यह तौ हम कों तबहि
न सिखयो जब तें गाय चरावत ॥ सूरदास प्रभु जैं कहियो अ
बलि खिलि खि कहा पठावत ॥३॥ राग परज ॥ ऊधो अब ब्रजप
हुचे जाय ॥ नबकी कथा कृपा करि कहियें हम सुनिहैं मन
लाय ॥१॥ बाबा नंद जसोदा मैया मिलें कबनहि तआई ॥ कब
हु सुरति करति मांखन की किधों रहे बिसराई ॥२॥ गोपी सखा
दधि भात खात बन अरु चाखते चखाई ॥ गोबच्छ मुरली सुनि
उमडत अब हीं रहत किहि भाई ॥३॥ गोपिन गृह औ हार विसा
रे सुख सन मुख मुख पाई ॥ पलक ओट निमिष पर अनख्या
ती यह सुख कहां समाई ॥४॥ एक सखी उनपें ज्यो राधो लेति
मन ज्यो चुराई ॥ सूरस्याम यह बार बार कहि मनहीं मन पछि
ताई ॥५॥ राग परज ॥ भरि भरि लेत लोचन नीर ॥ तुम बिना ब्रज
नाथ बिरहिनी विरह विरह अधीर ॥१॥ कवल गन उर आनि
राखत छिरकि चंदन चीर ॥ जाल मग ससि किरनि रोकत तम
लय मंद समीर ॥२॥ होइहौं तुम पास पठायो जांनि मन मथ
पीर ॥ सूर प्रभु सुजान श्रीपति मिलि हूरों जियपीर ॥३॥ राग
परज ॥ नैंन धन घट तन एक घरी ॥ कबहु न मिटत सदा पावा
वस ब्रज लागि रहत करी ॥१॥ बिरह इंद्र बरषत निशि बासर
Shrimad Gokulnathji Maharaj

इहअवधिअधिककरी॥ कुरुखेत्रसमीपतेजलंगराउवी
उमगिभरी॥२॥ छूटतिभुजोरोमअंगवाढ्मंअरुकुचउंचपरी
चलिनपाकेनपदरपाविकरहेपाकिचरनकीचखरी॥३॥ सर्व
रितुमिरिएकभईब्रजमाहिंइहविधिउलटिघरी॥ सूरदासप्र
भुतुमरविछुरैंमितिमरजादहरी॥४॥१॥ राग मारु॥ सुनिऊधोमो
हिनेंकनविसरतवेब्रजवासीलोग॥ तुमउनकोंकछुभलो
नकीनोंनिसदिनदियोवियोग॥१॥ जद्यपिकनकमनिरची
द्वारिकासकलराजसुखभोग॥ तदपिमनहींउहांहरतवंसी
वटवनजमुनासंयोग॥२॥ वेउनरहतप्रेमअवलंबनइततेंपठ
योंजोग॥ सूरदासछांडिभरिलोचननवघोंविरहजवसोग॥३॥
॥ राग धनाश्री॥ हैकोईइहिनीभांतिरिखावे॥ किंकिनीसबदचलन
धुनुरुनुझुनुठुनुकठुनुकमहिआवे॥१॥ कछुककविलासवदन
कीसोभाअरुनकोटिगतिपावे॥ कंचनमुकरबंकमुक्तावलि
मोरपछछबिबिछावें॥२॥ धूसरधूरिअंगमोहनबालवाल
संगलावें॥ सूरदासप्रभुकरतजसोदाभागवडेतेपावें॥३॥ राग
धनाश्री॥ पंथीइतनीकहियोबात॥ तुमबिनयहांकुवरवरमेरे
होतजितेउतपात॥१॥ वकीअघासुरटरतनरपेबालकवनहि
नजात॥ ब्रजपंजरीरुधिमांनोहरिविनिकसनकोंअकुलात
२॥ गोपीगायसकललघुदीरघपीतवरनकुमगात॥ परम
अनाथदेखियततुमबिनुकेहिअवलंबियेनात॥३॥ कान्हकां
हकेररततनवधोंसवकैसेंजियमानत॥ यहव्यवहारआजु
लौंहेब्रजकपटनाटछलठांन॥४॥ दसहूंदिसाउदितहोतहैं
दावानलकोंकोय॥ सबरसूरसहायकरोअवसमुझिपुरा
तनहोय॥५॥ राग धनाश्री॥ तुमकोंहोकहांतेंआएहो॥ जोनत
हेउनमांनमंनेंतोतुमजरनाथपठाएहो॥१॥ वैसेहीवरनव
सनतनवैसेवेभूखनसजिआएहो॥ लेसर्वसुसंगसखाप्रि
धारेअववकापरपहिराएहो॥२॥ अहोमधुपएकेमनसबके
सुतोउहांलेछाएहो॥ अबयहकोनसयानबहुरिब्रजजाबा
रनउठिधाएहो॥३॥ मधुवनकीमानिनीमनोहरतहांहीं
जाउजहांभाएहो॥ सूरजहांलौंस्यामगाततहैंजानिभलेंक
रिपाएहो॥४॥ राग धनाश्री॥ कोउवैसेंहीआनुहारि॥ मधुवन
तेंआवतसखीरीदेखोंनैननिहारि॥१॥ माथेंमोरमुकट
कटिकिंकिनिपीतवसनरुचिकारि॥ वैसेईबातकहतनसा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. रघ्यौसोव्रजगनभुजापसारि ॥४॥ इतनीबातनिविचारतऊअंतर
२२९ जनुबीतेजुगचारि ॥ सूरदासप्रभुबिनसबऐसीजैसेंमीन
बिनुबारि ॥५॥ रागपरज ॥ होंइहांतेरेहीकारनआयो ॥ तेरीसोंसु
निजननीजसोदाहूंछिपोपालपठायो ॥१॥ कहाभयोजोलो
गकहततेहेंदासितनुमातजायो ॥ खांनपांनपरिधानराज
सुखतेहूंलाडलडायो ॥२॥ इतनोहमपररोजछपिकामोजीव
छूंनभायो ॥ जबजबसुरतिहोतिउनहींकीविछुपिंवछायो
धायो ॥३॥ कूंसमाबारसुधिपाईबहुतकसुखदिखरायो
चलहुनकुटंबसमेतसूरनंदनंदनउहांबुलायो ॥४॥ रागन
ट ॥ ऊधोकहांकरोलेपाति ॥ जबलोंनदेख्योगोपाललालकों
विरहजरावतिछाति ॥१॥ जोमनतेंहैंतुममानतनाहीतुमरी
स्यांमसंघाती ॥ निमिषनिमिषमेंविसरतनाहींतेमेंरोंसो
सारदसुहाईराती ॥२॥ यहपातीलेजाहुमधुपकाजहांबसेंसो
मसुजाती ॥ मंनहुहमारोउहांलेगयेनीमकठिनसुरघाती
३॥ सूरदासप्रभुकहाचाहतहैकोटिकबातनसुहाती ॥ एक
बेरमुखबहुरिदिखावहुरहेंचरनरजराती ॥४॥ रागबिला
वल ॥ गोकुलजीवनगोबिरमेरे ॥ नाहिलागेरहौसुनतु
मतुदरखमूलतभटकमनमेरे ॥१॥ नाकेगरबबदरोंनहि
सुरपतिरह्योजुदिवससातलोंघेरें ॥ व्रजकोनाथगोवर्द्धन
धारीसुभुजनभुजनमखरक्षतनेरें ॥२॥ जाकोंजसघरिखिगारगोप
खांभ्योकहानिगमनिजुतेंएजुदेरें ॥ सोअबसूरदासहितसंक
र्षणपाएजननुघनेरें ॥३॥ रागनट ॥ बहुतदिनबीतेहरिबि
नुब्रह्मी ॥ इरसनहीनदीनदुखितक्येंबहुबिधिविपतिसही ॥१॥
इजनीयोंसप्रेमअगनिपीडितगृहकनधरतनधीर ॥ परगुण
मगुजोबतेउरअंतरभीजतनैंननिनीर ॥२॥ अबलोंआसम्र
बधिबाधिगिनिगिनिराखतहिरदैघरवाम ॥ सूरदासप्रभुप्री
तिपुरातनमिलहुपियामनआस ॥३॥ रागधनाश्री ॥ मोहनव्र
जतजिगएजुकालि ॥ सुंदरस्यामकमलदललोचनवेपो
बिसरेंनिधिआलि ॥१॥ कहाकरोंकछुनतकर्मआपनोकरि
होंकितजाल ॥ इसअपरातिअक्रूरआयोलेंगयोरथचाल ॥२॥
रुदनकरहीजुदारिबनिताकरतिअतिदुखहाल ॥ सूरके
प्रभुकहिजसोदाकहांपाईपाल ॥३॥ रागनैट ॥ हमपरऐसेंजो
गनहोइ ॥ सुनिसुनिबचनतिहारेऊधोनैंनाआवतरोइ ॥१॥

कुटिलकुंतलमुकरकुंडल रहिरही छबिपोइ ॥ सूरस्यांमबि
नप्राणराखेंनहि कोटिकरोंकिनिकोइ ॥४॥ राग नट ॥ ऊधोजोग
कहोंकिधोंहांसी ॥ जबतेंआएहू मारे ब्रजमेंडारिप्रेमकीफां
सी ॥१॥ तुमहोंबडेजोगकेपालक संगलियेंकुबिजासी ॥ सूरदा
सप्रभुतुम्हारे रसकोंबरखरलीजोंकासी ॥२॥ राग नट ॥ बिन
ती सुनोंएकमोरारि ॥ जाद्दिनतेंबिछुरेनंदनंदन कांमबरख
तनघेरीरी ॥१॥ देखोंहरिदेंबिचारि तुमहोअब प्रीतिरीतिसब
केरी ॥ नहतोजोकीनिश्चिततहांसब मोपेंज्योंमृगनारदअहेरी ॥२॥
बेदसमानरतन रसबसेतें ससिबिनरेंनिअंधेरी ॥ सूरदा
सस्वामीकबआवें बसीकरनब्रजफेरी ॥३॥ राग नट ॥ बिनती
सुनहूहमारी ॥ जाद्दिनतेंबिछुरेनंदनंदन कांमअनलअतिजा
री ॥१॥ हमकोंजोगसिखावन ऊधोंपठएआपुमुरारी ॥ राधेकु
परलीनलगावन कहतनवातबिचारी ॥२॥ हमसोंप्रीति
भईसपनेकी कीनीहांसीनारी ॥ इनबातनसोंनेहचें कुबिजा
पतिभएहें स्यांमबिहारी ॥३॥ अबऊधोंकछु कहतनआवें
प्रेमघटाअतिभारी ॥ लिख्योपरमपद सूरस्यांमसब गोकुल
दीनदुखारी ॥४॥ राग नट ॥ ऊधोंधनितुम्हारोब्यवहार ॥ धनिवे
ठाकुरधनिवेसेवक धनिगुनबर्तनहार ॥१॥ आंबकुंकाटि
बबूरलगावत चंदनकीकरिबारि ॥ साहकुंपकरि चोरकुं
छोडतचुगलनकोंइतबार ॥ सूरस्यांमकेमोंनेंबहेंगरिअंध
धुंधसिरकार ॥२॥ राग नट ॥ ऊधोंतुमकहतकोंनकीबातें ॥ सु
निऊधोहम समुझतनाहि फिरिपूछतहोंतातें ॥१॥ कोनपभ
योकंसकेहि माहयोंकोवसुदेवसुतआहि ॥ इहांजसोदासुत
परममनोहरजी जतुहेंमुखचाहि ॥२॥ निसदिनरहतधेनुब
नचारत गोपसखनकेसंग ॥ बासरगत रजनीमुखआवतक
रतहेंनेंनगतिपंग ॥३॥ कोपूरनअबिगतअबिनासी कोबि
धिबेदअपार ॥ सूरबृथाबकतबादिबढावत एहीब्रजनंद
कुमार ॥४॥ राग केदारो ॥ कमलनयनकीऔधिसिरानीअ
जहूंभएनआवन ॥ निसिबासरहोंसगुनमनावति मिल
हूंकृपाकरिभावन ॥१॥ सबेंसंदेसबिदेसीआए बिरछप
बिहूछावन ॥ मांनोबिरहबिवाहकेआयो कीडामंगलगाव
न ॥२॥ तामहंमोरघटाघनगरजहि संगमिलेतेंहिसावनभर

सू.सा. भादोंवेछाय घोषपति नारिन दुखविसरावन ॥३॥ विनदेखेंवें
२८० कलनपरें नएक छिन वह सूरति चितचावन ॥ सूरदास प्रभु कानो
ऐसी वैरी कंस ज्यों रावन ॥४॥ रा॰ मलार ॥ प्रिअखरचाढि प्रखीन रे
रि सुनायो ॥ विरहिनि सावधांन ह्वै रहियो सजि पावेस दल आ
यो ॥१॥ दादुर वान नत पावत साजो चंदिके चरकिन चायो ॥ मद
न सुभट कर पिय वबानं मलें व्रजसन्मुख ह्वै धायो ॥२॥ पिकवाचक
खेगामृगजे हूं सब हि मिलि मारू गायो ॥ मानि विरह संग एहो
ताते अवल लानित्रा स दिखायो ॥३॥ मदनमोहन बिन देखें सज
नी घरि पल छिन न सुहायो ॥ सूरदास स्वामी गुण पाहिलें सु
मिरि प्राण विरमायो ॥४॥ रा॰ नट ॥ अब वे लागे दिन जोंन सु
मिरत प्रीति लाज लागत है उर भयो कूप समान ॥१॥ लोचन र
हितचंदन विन देखे वचन सुने बिनु कांन ॥ छिरकें रहितु पांन
नूपुर सेछीनत तन मन प्रांन ॥२॥ वेज समों लियाएं द्रवें दल बिर
हमाछि व्रजप्रांन ॥ विधिवस हरे वहु सिखीरवीने वे सिसवे रख
वांन ॥३॥ नवते गए मधुपुरी मोहन विषय रवांन सरूपांन ॥ इह
तें सूरय हैं जु भांति हो बसियें अगमान ॥४॥ रा॰ नट ॥ पाती मधु
वन ही तें आई ॥ सुंदरस्याम आप लिखि पठई आय सुनो री माई
॥१॥ अपने अपने गह हो तें लें लें पाती उरलाई ॥ नैनन निनीर निमिख
निमंडित प्रेम कणक कुमाई ॥२॥ कहां करो सूनो यह गोकुल ह
रि विनु कछू न सुहाई ॥ सूरदास प्रभु कोंन चूक तें स्याम सुरति
विसराई ॥३॥ रा॰ नट ॥ ऊधो कहत स रेसो नीको ॥ हितं उपदेस
करन व्रज आए लियें मतो हरि जी को ॥१॥ जोग जुगति निर्गुन उ
पदेस तत्पांन सुनायक जती कों ॥ विरह व्याधि औषद निकी ज्यों
आमवात पथ्य मही को ॥२॥ हमको जोगभोग कुबरी सों ज्ञान
दृढा एजी को ॥ सूरस्याम विन और न जानें यह निश्चें हियको
॥३॥ रा॰ नट ॥ तुम सों प्रीति ऊधो पूरव जन्म की ॥ अब हम भए मेरे
तनहु के गरजी ॥ वहुत दिनन विरम रहे हो छांडे संगन बिछोह हो इ
म हीं गाए वरजी ॥१॥ नारिन तें तुम प्रीति करी हो घर तें निवरती
तू लोले हू नन रजी ॥ सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलन तुम किनु विना
तन पोवो न विरह भयो दरजी ॥ रा॰ विहागरो ॥ कुसुम कुसु
वरन तें लुं कुसुम कहां मे पाउं ॥ नहीं विधना मोहें पंख दीनी
उडि केंद्वारिका में जाउं ॥१॥ ऊधो जू तुम वे गिआ पों स्यां महि वेगि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

लेंआऊं॥ सूरके प्रभु दरस दीजौं नेरी कहा पश्रव कौंनकी कहूंसे
॥ रा॥ बि॥ ह॥ गयों जाश्रो जी जाश्रौ मेरे श्रागे तें मेंपति राखों ऊधो
तेरी॥ कान्ह कुंश्रव तुमरो मरिवा वत देखत श्रांखि वर नहें मेरी
१ तुमजो कहत हे संगहे गोविंद कहि पतहे कुब्जिजा गुनि चेरी
देषऊ मिलिनें मेई तें सबे श्रहीर बाकंस की चेरी॥ २ तुमसारि
के बसी ठपना ए कहियें कहां बुद्धि उनकेरी॥ सूरस्याम वहू
सुधि बिसराई गावति हें ग्वालिनि संग हेरी॥ ३॥ रा॥ सिं॥ ११
ऊधो इतनो मोहि सतावति॥ कारी घटा देखि बादरकी दामि
नि चमकि डरावति॥ १ हेमसुतापति कोरिपु व्यापे रवि सुत
रथ न चलावत॥ श्रंबुखंडनशावक सुनत हि चित नचकित उठि
धावत॥ २ कंचनपुरपति को जो भ्राता ते सबबलहि न श्रावत
संभुसुत के जो वाहन हे कुहुके श्रसल सलावत॥ ३ सुरपिभू
खन श्रंगबनावत मोई भुजंगा दोइ धावत॥ सूरदास बिरहि
नि श्रति व्याकुल खगपति चढि किन श्रावत॥ ४॥ रा॥ सिं॥ री
ऊधो पहिं हितु लागत काहे॥ निसदिन नेंन तपति हरि कहियो
तुमजु कहत हरि माहे॥ १ पलक न परति बहुदिस चितवत नवि
रहा न लकें डाहे॥ इतनो श्रारति वाहि न मिलिहि जो परिस्याम
पहां हे॥ २॥ पा लागों ऐसे ही रहो रे श्रब न श्रास जल थाहे
जिनि बोरही गुन समुद्र में पुनि पाई बिनुबाहे॥ ३॥ उपजि परी जा
सों जिहि श्रंगासण सो पगावने निवाहे॥ सूरकहा लें करें पपी
हा एतें सर सरिता हे॥ ४॥ रा॥ सिं॥ ७॥ वैसी सारंग कर हि लियें
सारंग कहत सुनत वे सारंग सारंग मन हि दियें॥ १॥ सारंगध
की बेंठी यह सारंग सारंग बिकल हियें॥ सारंगधुकि सारंग
परिसारंग सारंग क्रोध कियें॥ २॥ सारंग हें भुज कर हि विराज
त सारंग रूप बियें सूरदास मिलहि वे सारंग तो परिसुफल
जियें॥ ३॥ रा॥ सिं॥ री॥ देखों भाई स्याम सुरति श्रब श्रावें॥ दादुर
मोर कोकिला बोले पावस श्रगम जनावें॥ १॥ देखि घटा घन
चपि दामिनी मदन सिंगार बनावें॥ बिरहिनि दि रखि श्रनाप
नाप बिन बढि बढि ब्रज पर श्रावें॥ २॥ कासों कहों जाय कोई
हरि यह दुख सदेस सुनावें॥ सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि
ब्रजबनिता सुख पावें॥ ३॥ रा॥ सिं॥ री॥ स्याम सि धार कोनदेस
तिन को कठिन करेजो सखी री जिनि के पिय परदेस १ उनऊ

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. धौं कछु भलीन कीनी कौं न जगन बौं बेस ॥ छिन भरि प्राण
२२१ रहत नाहि हरि बिनु निसदिन अधिक कलेस ॥२॥ प्रान हूं नि ह
र पाति पांती नांही पठई काहूं हाथ संदेस ॥ सूरदास प्रभु यह
उपजत है धरियें जोगिनि बेस ॥३॥ रा सिं धु ॥ हरि बिन बेसुव
बहुरि कहूं ॥ नदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात
तहूं ॥१॥ मुख मुरली सिर मोर पखवने औ घुंघुचिन के हार
आगें धेनु रेनु तन मंडित चितवनि तिरछी चारि ॥ रांति धौं स
अरु अंग अपने हिन हंसि मिलि खेलन खांम ॥ सूर देखि
प्रभुता उनकी कहीं न आवे बात ॥४॥ रा सिं धु ॥ ऐसो कोउ ना
हिंन सजनी जो मोहू नहि मिलावे ॥ एक बार बहुरिनैं रहनैंद न
को इहां लौं लैं आवै ॥१॥ पाइनि परि बिनती करि मेरी यह सब र
सा सुनावें ॥ निशि नि कुंज सुख केलि परम रुचि रास रंग की
सुरति करावें ॥२॥ औरख कौं न द्रु साथ की सरु चनि सब निधि
की उपजावैं ॥ पुनि पुनि सरयहैं का … मों लोचन आरति
बुझावें ॥३॥ रा सिं धु ॥ बटाउ होहिं न … का के मीत ॥ संग रहत सि
र मेलि ठगौरी रहत अचान … ॥१॥ मोहे रूप नैन रस मन
के श्रवण मुरली कौं गीत ॥ देखत ही हरि लें जुस धाय बांधि
पिछोरी प्रीति ॥२॥ पाहु … नि यह हेम गा चितवत सुख अनुभ
ए बिपरीति ॥ सूरदास ब्रहु मिलि दुपिया आसा तजि परतीति
॥३॥ रा सिं धु ॥ समता इतनेंही सो काज ॥ कैसें हु बलि कमल न
यन कौं बहुरौ … आवहि आज ॥१॥ औ रस अनेक उपाय तुम्हारे म
कलकाहू सुषराज ॥ कैसें हूं नि बहूं अबलन पे कठिन योग
के साज ॥२॥ नख सिख सुभग स्यांम घन तन कौं दरसन हरति
विषाजु ॥ सूरदास हरि कौं न विधि वरनि विलोकनि बाजु ॥३॥
रा सिं धु ॥ ऊधौ हम अज्ञान अति भोरी ॥ सिखयौ जाय जोग की
बातें ना मारी नवल किशोरी ॥१॥ कंचन कौ मृग कौं न देख्यौ कि
नि लैं बांध्यो डोरी ॥ कहि धौं मधुप बारि मथि मांखन कौं नें भरी
कमोरी ॥२॥ बिन ही भीति चित्र किनि लेखौ किनि नभ थाल्यो
धोरी ॥ कहि धौं कौ नें कब औ कनिका जो हरि तनसी पछोरी ॥३॥
सब बिधि पूरन ग्यान तुम्हारे हम अबला मति भोरी ॥ चाह
त सूर स्याम ससि पूरन अखिया त्रिविधि चकोरी ॥४॥ रा सिं
धु ॥ हरि सुत सुन हृपिके तन आंहि इहां को कहे कौंन की बातें ॥ स्या

Shrimad Gokulnathji Maharaj

नथांनसुमिरोकेकाहूकोमरतासुजेंबतीकोंकोजिनि
कंसहते॥४॥हमरेंतोगोपतिसुश्रधिपतिवनिताश्रोरनि
तेमोरजंश्रधहूपरूपविकारीचितेंचितेंहरिहोत॥कबहु
केकहलीसमेतिलोंनेकनमांभकेसोत॥५॥नरिपसमंस
गसिसुलीनेंश्रावततनघोष॥सूरदासस्वामीमनमोहन
कतउपजावतदोष॥६॥रा॥सिं॥रि॥नलोचनतहंप्रीतिवि
नलेखनबिनचेतहिबतुराई॥याब्रजमेंकछुनहींयाहूकेंक
धोंजानिसुनाई॥१॥मनबसुमिरह्योंहेंमाधुरीमूरतिअंगअं
गउरभाई॥सुंदरस्यामकमलदललोचनसूरदाससुखदा
ई॥२॥रा॥ग॥सिं॥धु॥सबखोटेमधुबनकेलोग॥जिनिसंगस्या
मसुंदरसखी॥सिखएसबकहीएककोजोग॥१॥श्राएहेंकाहू
घतब्रजऊधोंजुवतिनकोंलेंजोग॥श्रासनध्यांनेनेंनमूंदें
सखिकैसेंकटेवियोग॥२॥हमश्रहीरीइतनीकहांजानेकु
कपसोंसंयोग॥सरसुवेदकहांलोंकीजेकहूंनजानेंरोग
३॥रा॥ग॥सिं॥धु॥माईरीमधुबनकीयहरीति॥निरसजानीतजि
तछिनभीतरबनकुसमरसप्रीति॥१॥तिनकेसंगीहेंबे
तबचितचयोश्रावेंपरतीति॥महीछांडिविसरहीकुबिजा
संगश्रापनरिपुहिजीति॥२॥तिनिपतियाहुमधुरसुनिबा
तेंलगोबररनसभीति॥३॥रा॥सिंधु॥ऊधोंजिनमधुबनत
नदेखों॥कछुवलसबसश्रोरेंश्रजनबसिके,जनमसुफलक
रिलेखों॥१॥[illegible]जाइलेंयहोंवहांजामेंराजकीबातें॥बाल
किशोरकुमारनिरखिमुखघरघरमांखनखाते॥२॥नुमनि
गुणनिजकहतनिरंतरनिगमनेतियहनीति॥श्रगटरू
पमदनमनयनकोंछांडोगेंरसनप्रीति॥३॥शिवविरंचिस
नकादिकमुनिमनसंतानेंजाकेध्यावत॥सूरदासप्रभुगो
पसुतनसंगगोधनबृंदचरावत॥४॥रा॥धना॥श्री॥मधुक
रकाहेकुंगोकुलश्राये॥वैसेहीसाचश्रपनेमेंदूनोविरहज
गाए॥१॥हमजाननिहेंजिनेंपठाएस्यामसंदेसोंल्याए॥न
नमजनमकेदूतनिरावनकोंनहीलारलगाए॥२॥क
हूंकरहीकहांजायसखीरीहरिविनकछुनसुहाए॥ज
नमसुफलसूरतिनकोंएकाजपरायधाए॥३॥रा॥मला
र॥श्राएमाईदूरगमस्यामकेसंगी॥जोपहिलेंरंगरंगेस्यामरं

Shrimad Gokulnathji Maharaj

गनिनहीकीबुधिरंगी ॥२॥ हमरीउनकीसौमिलवतहीं ताते
भएत्रिहूंगी ॥ सूधीकहे सखानिसमुझावतितेसाचेसरवंगी
२ औरनिकोंसबसुलैंबातनआपुनभएत्रिभंगी ॥ सूरसु
नामसिलीमुखजोपैवेघनकबचउपंगी ॥३॥ राग मलार ॥
आएनंदनंदनकेनेव ॥ गोकुलमांझजोगविसतायोभली
तुम्हारीसेव ॥१॥ जबवृंदावनरासरच्यौहरितबविकहूंए
हेव ॥ अबयहज्ञानसिखावनआएभसमअधारीसेव
२ ॥ अबलनिकोंसोव्रतठान्योंजोजोगिनिकोंजोगु ॥ सूर
दासप्रभुनंदतहिजीवहिआतुरविरहवियोगु ॥३॥ राग मला
र ॥ कोउब्रजबाचतनांहिनपाती ॥ कतलिखिलिखिपठव
तनंदनंदनकठिनविरहकीकांती ॥१॥ नेनसजलकागर
अतिकोमलकरअंगुरीअतिताती ॥ परसेजरैविलोकेंभी
जेंदुहूंभांतिदुखछांती ॥२॥ कोंऊंबाचसकैसूरसुनिविर
हमदनसरघाती ॥ मुखमृदुवचनविलासीवअबकीबहि
प्रेमरसमांती ॥३॥ राग सारंग ॥ देखिआएऊधोमततेहोंको हि
तउपदेशकारनब्रजआएलिखिमनोंहरिजीको ॥१॥ जोगसु
गतिनिर्गुणउपदेशातिश्रवनसुनायजतीको ॥ आवहुरीमि
लिसुनहुसयानेलिखिसुजसकौटीको ॥२॥ तजनकहेंअंब
रआभूषनदेहगेहसबतहीकों ॥ अंगभसमकरिसीसजटाध
रिसिखवतनिर्गुनफीकों ॥३॥ मेरेजानयहेंजुवतिनकोंदेत
फिरतदुखपीकों ॥ नासरापतेंभएस्याममतनतरुनगंहतडर
जीकों ॥४॥ जोपैप्रकृतिपरीजीवतेंसोसोचनभलीबुरी
कों जोलगिसूरव्यालतऊसिभाजेंसुखनहीहोतअमीकों ॥ प
राग बिहागरो ॥ ऊधउइहसबकरतडोलतकहसकहांमेंपाऊं ॥
द्वारेंतेरीडिआएऊंनीउनलाजलजाऊं ॥१॥ तोहेंछांडिऔरकौमें
कोनकीकहूंएउ ॥ ऊधोजीतुमबेगिजाऔप्रेमपातीपठाऊं ॥२
ढूंढिफिरीवनकुंजमाहिस्यांमस्यामांगाऊं ॥ याविधनानी
पंखदीनीउडिकेंद्वारिकाजाऊं ॥३॥ ऊधोजीतुमबेगिजाऔ
स्यामहिवेगिलेंआऊं ॥ सूरकेप्रभुदरसदीजोहरिहसिकें
कंठलगाऊं ॥४॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभ्रमरगी
तसंवादेसूरसागरेनवतितमोध्यायः ॥ ९० ॥ इतिश्रीसूरसागर
संपूर्णम् ॥ श्रीशुभंभूयात् ॥ ॥ श्रीशुभंभूयात् ॥ ॥ श्री

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ यह पुस्तक परम वैष्णव सेठ जैराम सिवजी मुंद्रा के वासी की
जो या पुस्तक कूं बांचें तिनकूं भगवद्स्मरण ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj